मूल्यः 20/–

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष–1, अंकः – 3 जून, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

मॉरिशस में हुआ अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव का सफलतापूर्वक आयोजन

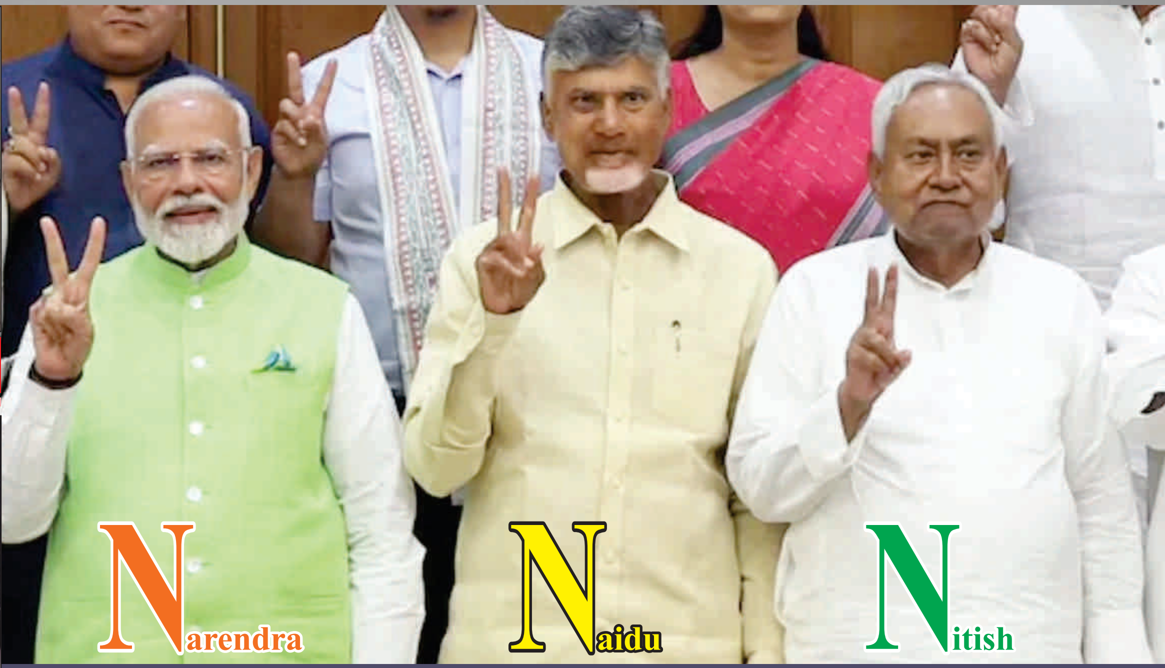

लोकसभा चुनाव में जनता ने एनडीए को बहुमत दी तो विपक्ष को शक्ति

शूटिंग के दौरान बाल बाल बचा : स्व.प्यारे मोहन सहाय (अभिनेता)

इंस्पायरिंग मदर्स 2024 में सीमा सिंह और सोनाली बेंद्रे द्वारा विभिन्न महिलाओं को सम्मानित किया गया

कांस फिल्म फेस्ट में राजपाल यादव के साथ जारी हुआ अभय सिन्हा की फिल्म 'संयोग' का पोस्टर व ट्रेलर

The N Factor

NDA 3.0

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 7903757037

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंकः –3 जून, 2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**
पटनाः **अभिषेक कुमार**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail-com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

मुंबई कार्यालय :
एक्सप्रेस जोन, मलाड, पंच बावड़ी, मलाड ईस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र– 400097.
मो.– 9386134769.

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

लोकसभा चुनाव में जनता ने एनडीए को बहुमत दी तो विपक्ष को शक्ति **10**

1. मत देना हम सभी भारतीयों का नैतिक धर्म है 2
2. मॉरिशस में हुआ अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव का सफलतापूर्वक आयोजन 3
3. यूनाइटेड किंगडम में उच्च शिक्षा पाने के बाद भारतीय विद्यार्थियों की वास्तविक अवस्था 4
4. शूटिंग के दौरान बाल बाल बचा : स्व.प्यारे मोहन सहाय (अभिनेता) 5
5. धीरूभाई अंबानी : रिलायन्स कॉमर्शियल के संस्थापक 6
6. जितना भी रोमांटिक वाला ड्रीम मैंने सोच रखा था सब एक ही हनीमून ट्रैवल में पूरा हो गया 7
7. इंस्पायरिंग मदर्स 2024 में सीमा सिंह और सोनाली बेंद्रे द्वारा विभिन्न महिलाओं को सम्मानित किया गया 13
8. पटना नगर निगम ने आयोजित किया युवा मतदाता जागरूकता समर कैंप 14
9. फतुहा में नुक्कड़ नाटक मोदी की गारंटी का मंचन 14
10. मॉरीशसः भारत से हजारों किलोमीटर दूर एक भारत 15
11. कितनी आमदनी पर देना है कितना टैक्स, नए इनकम टैक्स स्लैब के बारे में पूरी जानकारी 18
12. मोक्षदायिनी केतु 19
13. न्यास योग 20
14. लघुकथा : मॉर्निंग टी 21
15. आलेख : व्यक्तित्व की सुंदरता 22
16. कांस फिल्म फेस्ट में राजपाल यादव के साथ जारी हुआ अभय सिन्हा की फिल्म 'संयोग' का पोस्टर व ट्रेलर 23
17. संवेदनाओं को झकझोर देने वाली शानदार भोजपुरी फिल्म है 'रंग दे बसंती' 24
18. हमारी चुनौतियां 26
19. बेल का स्वादिष्ट शर्बत 27
20. लोहासिंह' जैसे रेडियो नाटक आज कहां लिखे जा रहे हैं...? 28

मत देना हम सभी भारतीयों का नैतिक धर्म है

राजनीति अगर लोकनीति के पथ पर चले तो सत्ता के लिए कोई छद्म कोई प्रपंच नहीं करना होगा। सत्ता का शीश जनता है, उसके शीश यानी माथे में जो आकलन, जो गणनाएं होती हैं, राजनीति का ध्रुव वहीं केंद्रित होता है। जनता अपना शीश मुकुट उसी के माथे धर देती है जो जनहित के अध्याय का पाठ कराता है। लोकतंत्र के महायज्ञ में अपने मत की आहुति देकर जनता सुख, शांति, समृद्धि और सुरक्षा चाहती है। मतधारियों की ओर से ससम्मान शीश मुकुट पाने वाला अगर मतधारियों के मन और मनोविज्ञान का आकलन ठीक–ठीक नहीं कर पाता तो मोहभंग होता है।

यह ऐसा महापर्व है जो पांच साल में एक बार आता है और इसमें शामिल होकर अपना मत देना हम सभी भारतीयों का नैतिक धर्म है। वो इसलिए भी कि हम अपने घर और घर की चौखट से बाहर समाज की युवा पीढ़ी को इस दायित्व का अहसास करा सकें कि देश हित में और समाज हित में यह कितना महत्वपूर्ण है।

मतदान इस बार तो हो चुका, जनता ने अपना मन मत के जरिये जाहिर भी कर दिया। जिन्होंने मतदान किया बोलो जिंदगी उनके लिए अपार सम्मान प्रकट करती है पर जो रह गए उनसे आने वाले चुनाव में अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने की अपील करती है।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

मॉरिशस में हुआ अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव का सफलतापूर्वक आयोजन

मनोज भावुक
भोजपुरी भाषा के ग्लोबल प्रोमोटर एवं सुप्रसिद्ध कवि

मॉरिशस सरकार के कला और संस्कृति विरासत मंत्रालय के तत्वावधान में 6 मई से 8 मई 2024, को अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव का आयोजन मॉरिशस के खूबसूरत समुंद्र तट लॉन्ग बीच पर बने पाँच सितारा होटल में किया गया, जिसमें मनोज भावुक को दुनिया के चुनिंदा दर्जन भर लोगों में मॉरिशस सरकार द्वारा भारत से बतौर रिसोर्स पर्सन और पैनलिस्ट बुलाया गया था। वहां उन्होंने भोजपुरी सिनेमा के सफर और संभावना पर न सिर्फ अपनी बात रखी, बल्कि इसी विषय पर अपनी बनाई डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई। विदित है कि भोजपुरी साहित्य व सिनेमा पर ऐतिहासिक काम के लिए मनोज भावुक को फेमिना और फिल्मफेयर द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2014 में भोजपुरी भाषा एवं साहित्य का प्रचार–प्रसार विश्व स्तर पर करने के लिए मॉरिशस के पूर्व राष्ट्रपति और पूर्व प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने मनोज भावुक को अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी गौरव सम्मान, मॉरिशस 2014 से सम्मानित किया था और मॉरीशस के राष्ट्रपति कैलाश पुरयाग ने मनोज के भोजपुरी गजल–संग्रह ''तस्वीर जिंदगी के'' का विमोचन किया था।

इस महोत्सव का उद्घाटन मॉरिशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ और समापन राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन ने किया। स्वागत और धन्यवाद ज्ञापन भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की चेयरपर्सन डॉ. सरिता बुधू ने की। कला और संस्कृति विरासत के मंत्री अविनाश तिलक ने कहा कि यह महोत्सव हमारे पूर्वजों को श्रद्धांजलि है।

तीन दिन सत्रह सत्रों में बंटे एकेडेमिक सेशन में मॉरीशस के विद्वानों के साथ इंग्लैंड से लोक सहदेव, फिजी से सुभाषिनी लता कुमार, सूरिनाम से श्रीमती लैला ललाराम, नाइजीरिया से हिमांशु त्रिपाठी, सिंगापुर से नीरज चतुर्वेदी, त्रिनिदाद से डॉ. भीषम, दक्षिण अफ्रीका से रामविलास, नीदरलैंड से राजमोहन, नेपाल से गोपाल ठाकुर और भारत से आईपीएस व वरिष्ठ कवि–उपन्यासकार मृत्युंजय कुमार सिंह, डॉ. संध्या सिन्हा, डॉ. राजीव कुमार सिंह, गायक राकेश श्रीवास्तव, प्रोफेसर प्रभाकर सिंह (बीएचयू), वरिष्ठ पत्रकार स्वयं प्रकाश और डॉ. पीयूष रंजन झा प्रमुख वक्ता थे। पूर्व राज्यसभा सांसद व उद्योगपति आर के सिन्हा विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। प्रोफेसर गुरुचरण सिंह, अशोक श्रीवास्तव, प्रदीप भोजपुरिया, हरेन्द्र सिंह, डॉ. उमाशंकर साहू, डॉ. राजेश मांझी व अमेरिका से आए सुभाष जी आदि डेलीगेट्स ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. नीतू कुमारी नूतन, मनीषा श्रीवास्तव, राकेश श्रीवास्तव, राजमोहन और मॉरीशस के गायकों ने लोकगीतों की शानदार प्रस्तुति दी।

इस महोत्सव में अनेक रिसोल्यूशन पास हुए। अगला भोजपुरी महोत्सव गोरखपुर व बनारस में करने की घोषणा हुई। सभी डेलीगेट्स को अप्रवासी घाट, गंगा तालाब, रामायण सेंटर, समुंद्री तट व अनेक रमणीय स्थलों का दर्शन भी कराया गया। इस महोत्सव को भोजपुरी के लिए एक क्रांति के रूप में देखा जा रहा है।

यूनाइटेड किंगडम में उच्च शिक्षा पाने के बाद भारतीय विद्यार्थियों की वास्तविक अवस्था

✍ शरद कुमार झा
काउंसलर, बकिंघमशायर, लंदन

मैं अपने बेटे–बेटी को लंदन में पढ़ाऊंगा। "माँ बाबूजी मुझे लंदन जाना है पढाई करने– सब दुःख दर्द दूर कर दूंगा मैं।"
कई सुनहरे अरमान संजोए लाखों के तादाद में भारतीय युवक–युवतियाँ यूनाइटेड किंगडम पहुँचते हैं पढाई करने। मन पसंद काम और और मन पसंद तनख्वाह पाने की अभिलाषा लिए निकल पड़ते हैं पदयात्रा में। क्या आजकल सचमुच ऐसा होता है ? – चलिए सुनते हैं अकाल्पनिक हकीकत।

अलग अलग विषय में विद्यार्थी पढाई करने आते हैं यहां। विभिन्न प्रकार के श्रेणी से छात्र आते हैं – (१) कुछ तो शौक से आते हैं पढाई के साथ साथ मनोरंजन करने – बस डिग्री लेना है – फिर वापस जा के घर का कारोबार संभालना है (२) कुछ जमीन, घर गिरवी रख के आते हैं (३) कुछ नौकरी से इस्तीफा दे के आते हैं कि बाद में और भी अच्छी नौकरी मिलेगी और (४) कुछ किसी प्रोजेक्ट में आते हैं यहां और साथ साथ पढाई भी करते हैं (५) कुछ बच्चे एजेंट के माध्यम से आते हैं, कुछ अपने से सब कुछ रिसर्च करके आते हैं और कुछ स्कालरशिप ले के आते हैं।

यहाँ आने के बाद यूनिवर्सिटी आपको सब तरह की सुविधा और सहायता देती है – बैंक अकाउंट खोलने से ले के, डॉक्टर रजिस्ट्रेशन, इत्यादि सब सूचना आपको क्रमानुसार मिल जाती है। मेरा सुझाव है कि आप शुरुआत में हॉस्टल बुक कर लें। कई बच्चे सोचते हैं, कि हॉस्टल बुक नहीं करूँगा। उससे अच्छा एक फ्लैट रेंट पर ले लूँगा। ऐसा नहीं करे, शुरुआत में घर रेंट पर लेने में – काफी परेशानी होती है।

कई विद्यार्थियों को ठण्ड से समस्या है। ये तो ठंडा देश है, आपको ठण्ड बर्दाश्त करना तो पड़ेगा। अगर ठंड से कठिनाई हो, तो यहाँ नहीं आएं। विद्यार्थियों को सप्ताह में बीस घंटा काम करने की अनुमति है। कई विद्यार्थोयों को अहँकार रहता है काम करने से – "मैं वहाँ अफसर था, मैं ये काम क्यों करूँ ?" कोई काम छोटा नहीं होता है, हर काम की इज्जत करें। अगर आप सही तरीके से श्रद्धापूर्वक काम करेंगे तो आप अपनी फीस और बैंक से लिया हुआ उधार धीरे धीरे चूका देंगे। भारतीय डिग्री या अनुभव की यहाँ ज्यादा कुछ एहमियत नहीं। अगर आप ये सोच कर आएंगे कि ये सब काम किया हूँ और इतना सारा डिग्री इकट्ठा किया हूँ, तो ये सोच को जितनी जल्दी दिमाग से निकाल दें अच्छा होगा। नए सिरे से यहाँ जिन्दगी शुरू करें और अपनी पहचान बनाएं।

पढाई खत्म करने के बाद यहाँ काम मिलना बहुत मुश्किल होता है। कोई आपको स्पांसर करने को जल्दी तैयार नहीं होता। कई बच्चे और रूपये खर्चा करके पोस्ट स्टडी वर्क वीसा लेते हैं। इसके बाद भी काम मिलना बहुत मुश्किल होता है। अपने भारत में काफी उपयुक्त अवसर हैं। जितनी जल्दी हो वहाँ जा के काम ढूंढे, आपको एक सम्मान पूर्ण और यथोचित काम मिलेगा। बाद में यहाँ किसी प्रोजेक्ट पर आएं या फिर घूमने आएं तो अलग बात। वक्त बर्बाद करना ठीक नहीं।

कुछ भी और सुझाव चाहिये हो मैं जरूर सही दिशा प्रदान करने की चेष्टा करूंगा। ❐

शूटिंग के दौरान बाल बाल बचा : स्व.प्यारे मोहन सहाय (अभिनेता)

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

मैं बी.एन.कॉलेज का विद्यार्थी था लेकिन ग्रेजुएशन बीच में ही छोड़ मुझे नौकरी करनी पड़ी। रेलवे मेल सर्विस में मैं आ गया। बचपन से ही नाटक का शौक था और मैं फुटबाल खिलाड़ी भी था। परिवारवालों को इस बात का शक था कि नाटक या खेल के चक्कर में कहीं मेरा जीवन ना बर्बाद हो जाये। इसलिए परिवार से बांधने के लिए 17 –18 वर्ष की उम्र में ही मेरी शादी कर दी गयी. लेकिन मैं नौकरी के साथ–साथ बराबर नाटकों में भाग लेता रहा। 'आकशवाणी ' का भी आर्टिस्ट बना। 1959 में मैं पटियाला में हो रहे ऑल इंडिया टूर्नामेंट में 'हैमर थ्रो' खेलने गया. लौटते समय मित्रों से मिलने दिल्ली चला गया। उनके कहने पर मैंने एन.एस.डी. संस्थान में जाकर आवेदन किया। उनसे इंटरव्यू में बुलाने का अनुरोध किया। मैंने कहा– "मैं खिलाडी हूँ, मैदान में उतरकर अपना फैसला करना चाहता हूँ।" कुछ दिनों बाद मेरा चुनाव हो गया,मुझे स्कॉलरशिप मिल गया। नाटक की पढ़ाई में सम्पूर्ण भारतवर्ष में मेरा दूसरा स्थान आया। सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मुझे पुरस्कृत किया गया। मैंने नाटक निर्देशन में विशेषता प्राप्त की। वापस लौटकर मैंने फिर नौकरी ज्वाइन कर ली क्यूंकि पारिवारिक परिस्थितियां पटना से बिहार जाने की अनुमति नहीं दे रही थीं। तब पटना में ही जमकर नाटक करना शुरू किया। मौका मिलने पर मैंने प्रकाश झा, श्याम बेनेगल, अनिल शर्मा, मृणाल सेन, रमेश सिप्पी जैसे फिल्मकारों के साथ काम किया। इसी बीच कई भोजपुरी फिल्मों व धारावाहिकों में भी काम किया। 'मुंगेरी लाल के हसीन सपने' धारावाहिक से काफी शोहरत मिली।

शुरूआती दिनों में मुझे भी स्ट्रगल करना पड़ा था, उस दरम्यान कई ऐसी घटनाएँ भी घटीं जिसकी मैंने कल्पना नहीं की थी। 1978 की एक घटना मैं सुनाता हूँ। बिहार के कलाकारों द्वारा फिल्म 'कल हमारा है' का निर्माण हुआ जिसमे मुझे खलनायक का किरदार निभाना था। शूटिंग पहाड़ पर की जा रही थी जहाँ लड़ाई के एक दृश्य में मैं घुड़सवारी कर रहा था। तभी तलवार,भाला व बंदूक देख मेरा घोडा भड़क गया और आगे के बजाये पीछे जाने लगा। वह जाकर रुका तो ऐसी जगह जहाँ से नीचे 40 फुट गहरी खायी थी। कैमरामैन चिल्लाया कि, प्यारे भाई को बचाओ। निर्देशक ने शूटिंग रोकी तो घोडा भी रुक गया लेकिन वहां से छः इंच भी पीछे जाता तो खायी में गिर जाता। मृत्यु निश्चित जान मैंने सबको शांत रहने को कहा। सोचा घोड़े से कूद जाऊं पर हिलना भी खतरनाक था। थोड़ी देर बाद सब शांत होने पर निर्देशक ने कहा कि इसी पोजीशन में शूटिंग शुरू करेंगे आप उतरें नहीं। अन्दर ही अन्दर मुझे गुस्सा आया पर मैं चुप रहा. मैंने होशियारी दिखाते हुए रिकाब से पैर निकल लिया. इश्वर की कृपा से मेरी जान बची. वहीँ एक दृश्य में पेड़ की ऊँची डाली पर भी चढ़वाया गया। आज जब मैं युवा कलाकारों को शॉर्टकट रास्ता अपनाते देखता हूँ तो थोड़ा मायूस होता हूँ।

❒

धीरूभाई अंबानी : रिलायन्स कॉमर्शियल के संस्थापक

कामयाबी का मंत्र

बड़ा सोचो, तेज सोचो, दूसरों से पहले सोचो। विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है। अपनी कीमत को समझो।

जन्म–	**जूनागढ़ 28 दिसंबर सन् 1932**
मृत्यु–	**06 जुलाई 2002**
शुरूआत–	**डिस्पैच क्लर्क**
फ्यूचर प्लान–	**देश की सबसे बड़ी कंपनी बनाना**
पुरस्कार–	**अनेक पुरस्कार व सम्मान**

गरीब परिवार से संबंध रखने वाले धीरूभाई अंबानी का जन्म सन् 1932 में जूनागढ़ (गुजरात) में एक गरीब शिक्षक हीराचंद अंबानी के घर हुआ था। बचपन से उनका मन पढ़ाई लिखाई में नहीं था। उन्होंने केवल दसवीं तक स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी। सत्रह साल की उम्र में नौकरी करने के लिए वे यमन चले गए। वहां ए. बैसी एंड कंपनी में उन्होंने डिस्पैच क्लर्क के पद पर काम किया।

उनका मन काम में नहीं लगता था। वे अक्सर मन ही मन सोचते कि यहां जितने घंटे मैं काम करता हूं, यदि उतने ही घंटे मैं अपने लिए काम करूंगा तो एक दिन में कितना कमा सकता हूं और एक महीने में इतना तो एक साल में उतना। एक दिन उन्होंने अपना काम शुरू करने का फैसला कर लिया और भारत लौट आएं।

धीरूभाई अंबानी ने नौ साल बाद भारत लौटकर अपनी पहली कंपनी रिलायन्स कॉमर्शियल की स्थापना की। सन् 1965 में उन्होंने चंपकलाल दमानी के साथ साझे में पन्द्रह हजार की पूंजी लगाकर मसालों का व्यापार आरंभ किया, लेकिन जल्दी ही उन्हें एहसास हो गया कि यदि वे मसालों की बजाए सूत का व्यापार करेंगे तो इसमें उन्हें फायदा ज्यादा होगा।

सन् 1966 में धीरूभाई अंबानी ने मसालों का व्यापार छोड़ दिया और सूत का व्यापार करने लगे। उन्होंने नरोदा, गुजरात में वस्त्र निर्माण इकाई का आरंभ किया। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे दिन–रात मेहनत करते थे। अपनी मेहनत, लगन और बुद्धि से उन्होंने रिलायन्स को देश की सबसे बड़ी कंपनी बना दिया।

उन्होंने सन् 1977 में पूंजी बाजार में अपनी योजनाओं को वित्तीय रूप दिया। उन्होंने अपने दम पर भारतीय शेयर बाजार का नक्शा ही बदल दिया। मध्यमर्वीय लोगों को अपना निवेशक बनाया। इस प्रकार धीरूभाई अंबानी ने देश में एक नई निवेशक नीति आरंभ की।

जिसमें आम जनता को उन्होंने अपने शेयर बेचे। रिलायंस ग्रुप ने देश में 500 कंपनियों का कॉर्पोरेशन तैयार किया जो अपने आप में एक मिसाल है। 'बड़ा सोचो, तेजी से सोचो व सबसे पहले सोचो विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं होता' की सोच रखने वाले रिलायन्स कंपनी के संस्थापक धीरूभाई अंबानी की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने सन् 1959 में अपना बिजनेस मात्र 15,000 रूपये की पूंजी से

आरम्भ किया था। सन् 2002 में जब उनकी मृत्यु हुई उस समय रिलायन्स ग्रुप की सकल संपत्ति 60,000 करोड़ के लगभग थी।

धीरूभाई अंबानी ने पॉलिस्टर, पैट्रोकैमिकल, तेल शोधक कारखाने व तेल की खोज का अरबों डॉलर का कॉर्पोरेशन तैयार किया। 6 जुलाई 2002 को उनका निधन हो गया। सन् 1996 और 1998 में एशियावीक द्वारा पॉवर–50 द मोस्ट पॉवरफूल पीपुल इन एशिया, सन् 1999 में हउर्टन स्कूल के डीन मैडल, सन् 2000 में द टाइम्स ऑफ इण्डिया ने उन्हें ग्रेटेस्ट क्रिएटर ऑफ वेल्थ इन द सेंचुरी, मेन ऑफ द कंट्री, 2001 में द इकोनॉमी टाइम्स एर्वाड फॉर कारपोरेट क्सीलेंश फॉर लाइफटाइम एचीवमेंट, फिक्की द्वारा 20वीं सदी के भारतीय उद्यमी का दर्जा दिया गया। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया है।

प्रस्तुति : एम. के. मजूमदार ❐

जितना भी रोमांटिक वाला ड्रीम मैंने सोच रखा था सब एक ही हनीमून ट्रैवल में पूरा हो गया

–ईशा राज यादव,
ब्रॉडकास्ट एक्जक्यूटिव, दूरदर्शन बिहार

मेरा ससुराल पटनासिटी में है. मेरे हसबैंड नीरज कुमार प्रोफेसर हैं इंस्टीच्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, चंडीगढ़ में। मेरी शादी लव कम अरेंज मैरेज है। मैं उन्हें 7–8 सालों से जानती थी। वो हमारे फैमली फ्रेंड थें। एक फैमली फंक्शन में ही हमारी मुलाकात हुई थी। कुछ दिनों तक हम दोनों में बातचित हुई फिर उन्हें बाहर जाना पड़ा और एक साल के लिए वो आउट ऑफ इण्डिया भी रहें। तब भी हमारी दोस्ती वाली बातचीत जारी रही। जब उनकी जॉब लगी और वे सेटल हो गए और चूँकि मैं भी तब जॉब में थी तो हमलोगों को लगा कि अब समय को देखते हुए शादी के बारे में सोचा जाये। क्यूंकि अब हम दोनों एक–दूसरे को पसंद करने लगे थें। एक तो हमारी कास्ट भी सेम थी और हम दोनों की फैमली की पहले से ही जान–पहचान भी थी इसलिए बिना किसी रुकावट के हमारी लव कम अरेंज मैरेज हो गयी। शादी दिसंबर 2016 में हुई. उसके ठीक पहले देश में नोटबंदी हो गयी थी। उस समय नोटबंदी की वजह से बहुत सी शादियां कैंसल हुई थीं। लेकिन हमारी शादी में कोई खास दिक्कत तो नहीं आयी लेकिन जो हमारा हनीमून प्लान था, हमलोग मलेशिया–सिंगापूर जाने का प्लान किये थें वो कैंसल हो गया क्यूंकि तब बाहर जाने पर भी हम बहुत कम पैसा ही कार्ड से निकाल सकते थें। फिर नेक्स्ट ईयर जून में हमलोग हनीमून के लिए बाली, इंडोनेशिया और मलेशिया गए। दिसंबर में जब हमारा फॉरेन का हनीमून ट्रिप कैंसल हुआ तो मैं बहुत ज्यादा दुखी थी। हसबैंड ने मुझे बहुत कन्वेंस किया कि चलो इण्डिया में ही कहीं घूमने चलते हैं। लेकिन मेरा सपना था कि हनीमून में इंडिया से बाहर ही जाना है।

मैं तब जॉब में थी तो मेरा ट्रांसफर होने में दिक्कत आ रही थी और मेरे हसबैंड चंडीगढ़ में थें इसलिए मेरा छुट्टी लेकर आना–जाना लगा रहता जो आज भी जारी है। तब छह महीने मैं पटनासिटी ससुराल में रही। चूँकि मेरे मायके से दूरदर्शन ऑफिस नजदीक है और पटनासिटी से काफी दूर पड़ जाता है तो मैं फिर मायके में ही रहकर ऑफिस जाने लगी। वीकेंड में मेरा ससुराल जाना होता है। मेरे पति के भैया–भाभी दिल्ली में रहते हैं और ससुराल में सिर्फ सास–ससुर जी। उन दोनों का व्यवहार बहुत ही अच्छा है। शादी बाद मुझे ऐसा फील नहीं हुआ कि ससुराल में मैं एक बहू हूँ। मेरी सास के दो बेटे हैं, कोई बेटी नहीं तो वे मुझे बेटी की तरह ही ट्रीट करती हैं। ससुराल में मीठा बनाने के अलावा हम कोई खाना आजतक नहीं बनाये हैं। मेरी सास हमको बनाने ही नहीं दीं।

जब जून में हमलोग फॉरेन गएँ, ट्रैवेल किये तो बहुत अच्छा लगा। हनीमून के दौरान मेरे सारे संजोये सपने पूरे हो गए। जब रात में हमलोग समुन्द्र के किनारे कैंडल नाइट किये। मेरा एक सपना था कि क्रूज में हमलोग ट्रैवेल करें और रात का डिनर भी क्रूज पर करें वो भी वहां पूरा हुआ। मेरा सपना था कि एक बंगलेनुमा रिसोर्ट में रुकें जहाँ अंदर में स्वीमिंगपूल भी हो और ये सब जितना भी रोमांटिक वाला ड्रीम मैंने सोच रखा

था सब एक ही हनीमून ट्रैवल में पूरा हो गया। वहां की नेचुरल ब्यूटी देखकर मन रोमांचित हो उठता था। मेरा यह फॉरेन का पहला टूर था। तब वहां मेरे हसबैंड की आदत से मुझे परेशानी हो गयी। वो हर दस मिनट पर मुझे बोलते कि पासपोर्ट चेक करो। पासपोर्ट को लेकर मुझे इतना नर्वस कर दिए कि एक बार ऐसा हुआ कि हम पासपोर्ट सही में भुला दिए। हमलोग एक रिसोर्ट में ही लंच कर रहे थें। मेरा दो बैग था तो एक बैग हम वहीं गलती से भूल गएँ थें। लेकिन जब वापस ढूंढते –ढूंढते गए तो वहां पर पड़ा हुआ मिल गया जिसमे पासपोर्ट भी था। उसके पहले मेरा दिमाग काम करना बंद कर दिया था। पासपोर्ट खो जाने पर ऐंबैसी में जाइये, ये करें–वो करें बहुत मुश्किल हो जाती। हसबैंड डांटना शुरू

कर दिए कि तुम बहुत केयरलेस हो। लेकिन उनके ही टोकने पर हर एक घंटे पर पासपोर्ट चेक कर–करके इतना ज्यादा कन्फ्यूज हो गए कि फाइनली मुझसे भूल हो गयी। उस घटना के बाद हमलोगों ने होटल के कमरे के लॉकर में पासपोर्ट डाल दिया और फोटोकॉपी लेकर ही हम घूमने निकलें। मेरा पहला फॉरेन टूर था तो अंदर से डर लगा रहता था कि अनजान जगह है, देर रात आ–जा रहे हैं कुछ अनहोनी न हो जाये। लेकिन वैसा कुछ हुआ नहीं। फिर हमलोग 8 दिन बाद इंडिया लौटे।

मेरे हसबैंड की एक शिकायत मुझसे हमेशा रही है कि "शादी के इतने साल हो गएँ मैं तुम्हारे हाथ की बनी रोटी खाने को तरस गया हूँ।" क्यूंकि सच में आजतक उन्हें मेरे हाथ की रोटी नसीब नहीं हुई। चंडीगढ़ में भी रहते थें तो हमलोग कुक रखे हुए थें क्यूंकि मुझे खाना बनाना नहीं आता था। मैं सब्जी तो बना लेती लेकिन रोटी बनाना मेरे बस की बात नहीं। मैंने आजतक किया भी नहीं क्यूंकि शुरू से ही ऑफिस आना–जाना रहता था और मायके व ससुराल दोनों ही जगह कुक या मेड खाना बना देते थें।

मेरे हसबैंड अपनी फैमली से बहुत प्यार करते हैं। जब मैं चंडीगढ़ में थी तो मेरे सास–ससुर दस दिनों के लिए आये हुए थें। वहां पहले से ही कुक की व्यवस्था थी। जब एक दो दिन कुक नहीं आ पाया तो मुझे खाना बनाना पड़ा। मैंने सब्जी बनाई तो नमक थोड़ी तेज हो गयी। मुझे रोटी तो ठीक से बनानी आती नहीं थी फिर भी मैं एक्सपेरिमेंट करने जा रही थी। लेकिन तब मेरी सास की तबियत थोड़ी खराब थी फिर भी उन्होंने मेरी हेल्प की और मेरी जगह उन्होंने रोटी बना दी। हम सास–बहू में अगर कभी कोई खटपट हुई भी तो तुरंत मैटर सॉल्भ हो जाता था। मेरे हसबैंड की एक अच्छी आदत है कि वो माँ की भी सुनते हैं और मेरी भी सुनते हैं। उन्हें कभी मुझे डांटना होता तो कभी भी सबके सामने मुझे नहीं डांटते। कुछ बोलना भी रहेगा या कुछ शिकायत रहेगी तो अकेले में मुझे बोल देंगे। शादी के बाद 5 फरवरी को मेरा बर्थडे था और उस समय पटना ससुराल में थी। हसबैंड चंडीगढ़ में थें और मैं चंडीगढ़ से वापस आ गयी थी। मैंने उन्हें बोला "आप बर्थडे में आ जाइये।" वे बोले– "देखता हूँ–ऐसा है, वैसा है।" मुझे एहसास हुआ कि उनको छुट्टी लेने में कुछ दिक्कत हो रही थी। तो ससुराल में अचानक से मुझे सरप्राइज गिफ्ट मिला। मेरे सास–ससुर थोड़े पुराने ख्यालात के हैं, शो ऑफ करने और केक काटने में यकीं नहीं करते। ज्यादा–से–ज्यादा मन हुआ तो वे मंदिर में पूजा करवा देंगे। शादी के बाद यह मेरा पहला बर्थडे था और उन्होंने बहुत अच्छे से सेलिब्रेट किया। मेरे हसबैंड ने भी मुझे ऑनलाइन ऑर्डर करके बुके और केक भेजा तो मन खुश हो गया। मेरी सास ने पहले ऐसा किया नहीं था। मेरी जेठानी को भी कभी ऐसा सरप्राईज नहीं मिला था। तब मेरे बर्थडे में केक भी कटा और मेरी पसंद की मिठाई और खाने में पसंद की सब्जी भी बनी थी। सास ने गिफ्ट में मुझे गोल्ड की इयररिंग दी थी। काफी यादगार पल था।

जब मेरी शादी की पहली सालगिरह आनेवाली थी हमलोग दुबई जानेवाले थें। मुझे ट्रैवल करना शुरू से ही पसंद है तो मेरे हसबैंड को लगा कि सालगिरह का इससे अच्छा गिफ्ट क्या होगा, कहीं किसी कंट्री में ट्रैवल को चलते हैं। गिफ्ट तो बहुत मिलते रहते हैं, मुझे गहने पहनने का उतना शौक नहीं जितना घूमने का है। मैं पैसों को जमाकर के रखने की बजाये उसे

खुशियों पर खर्च करने में यकीं रखती हूँ। तब चार दिनों का प्लान था दुबई का लेकिन फिर उन्हें इंस्ट्च्यूट में छुट्टी नहीं मिल पायी जिससे मेरा मूड बहुत ऑफ हो गया। लेकिन इन्होने मुझे ज्यादा दुखी नहीं होने दिया और फिर बाद में छुट्टी मिलते ही मुझे दुबई घुमाया और इस बार 7 दिनों का पॅकेज प्लान था. वहां जाकर टॉलेस्ट बिल्डिंग पर चढ़ना, आदि का शौक भी पूरा हुआ। मैरेज ऐनिवर्सरी का यह गिफ्ट मुझे थोड़ा लेट मिला लेकिन कहते हैं न कि जो चीज लेट मिलती है बहुत मीठी होती है।

मेरी मम्मी का नेचर बहुत स्ट्रिक्ट है। तो कभी–कभी मुझे ऐसा लगता है कि मेरी जो सास हैं वो मेरी मम्मी हैं और जो मेरी मम्मी है वो मेरी सास हैं। मेरी सास कभी मुझे डांटती ही नहीं लेकिन मेरी मम्मी शुरू से ही स्ट्रीक्ट रही है। शादी के बाद जैसे ही ससुराल गए और दो–तीन दिन बाद जैसे मायके आने का रिवाज होता है तो मेरे साथ मेरे हसबैंड भी आये थें। मेरे हसबैंड से मेरी मम्मी ने पूछा–आपको तंग तो नहीं की। मेरे हसबैंड बोलें–ऐसा कुछ नहीं है। मेरी हसबैंड से मम्मी बोलने लगीं–अभी बच्ची है, दिमाग नहीं है। सीख जाएगी। बहुत तरह का उनको ज्ञान दी। उसी बीच दिसंबर में मेरी मम्मी का बर्थडे था तो मेरे हसबैंड सेलिब्रेट किये। हम सब ने साथ जाकर मूवी देखी। अच्छा लगता है आपके पति भी जब आपके माँ–बाप को अपने माँ–बाप की तरह प्यार देते हैं। तभी तो आपके अंदर भी फिलिंग आती है कि उनके माँ–बाप को भी आप केयर करें। उससे रिश्ते और भी ज्यादा गहरे हो जाते हैं।

शादी की शुरुआत में ही हमदोनो के बीच थोड़ा मन–मुटाव हो गया था। उस समय सोशल मीडिया का इस्तेमाल हम खूब करते थें। मैं कहीं भी घूमने जाती तो अपनी तस्वीरें लेकर अपलोड करने बैठ जाती और पता ही नहीं चलता कि कितना समय वेस्ट हो गया है। इससे हसबैंड चिढ़ जाते थें। मेरे हसबैंड को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था कि आप हर वक्त फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम पर बीजी रहें। उनका कहना था कि "आप वक्त को इंज्वाय कीजिये, अच्छी चीजों में लगाइये, क्यूंकि वक्त कभी लौटकर नहीं आता।" वो प्रोफेसर हैं तो मुझे भी स्टूडेंट समझकर सुबह–से–शाम तक थोड़ा लेक्चर देते रहते हैं. तब पहले थोड़ा तंग आ जाती थी लेकिन अब सुनना मेरी आदत हो गयी है।

पहले मैं नॉन–वेजिटेरियन थी चूँकि मेरे हसबैंड वेजिटेरियन हैं इसलिए मैंने अपने आप को भी वेजिटेरियन में कन्वर्ट कर लिया है। मेरे मायके में सभी नॉन वेजिटेरियन हैं। तो हसबैंड मायके जब आते हैं तो उनके लिए वेज बनता है। मेरा पूजा–पाठ में उतना रुझान नहीं है लेकिन मेरे पति बहुत ज्यादा पूजा करते हैं। सुबह जल्दी उठकर ऑफिस के लिए रेडी होना है तो मेरी पूजा एक मिनट में खत्म हो जाती है। लेकिन मेरे हसबैंड की पूजा आधे घंटे तक चलती है। चूँकि उनको भी कम पर जाना होता है, फिर भी वो मैनेज करके टाइम निकाल लेते हैं और 15 मिनट–आधा घंटा देते हैं। हर एक मंगलवार को वे मंदिर भी जाते हैं। जब तक वे पूजा न कर लें खाते नहीं हैं। लेकिन मैं इतना नहीं सोचती। भूख लगे तो पहले खा–पी लेती हूँ फिर पूजा कर लेती हूँ। तो इन्ही छोटी–मोटी बातों पर हम दोनों में बहस भी हो जाती थी लेकिन फिर सब तुरंत ओके हो जाता। ❐

लोकसभा चुनाव में जनता ने एनडीए को बहुमत दी तो विपक्ष को शक्ति

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

लोक सभा चुनाव में जनता ने एनडीए को बहुमत दी है लेकिन विपक्ष के I.N.D.I.A. को भी शक्ति दी है। ऐसी स्थिति में सरकार चलाना आसान नहीं होगा। नरेन्द्र मोदी की लगातार तीसरी बार एनडीए सरकार जरूर बन रही है, लेकिन इस सरकार की तुलना पहली दो बार की जीत से नहीं की जा सकती है। पहले दो बार बीजेपी केवल अपने दम पर सरकार बनाने में सक्षम थी। इस बार जब तीसरे कार्यकाल में बड़े बड़े काम करने का ब्ल्यूप्रिंट तैयार कर लिया गया था तब बीजेपी कुल 240 सीटों पर सिमट कर रह गई। एनडीए सरकार रहेगी लेकिन एनडीए जीत कर भी दिल मसोसता रह गया और विपक्षी गठबंधन बढ़त लेकर भी हाथ मलता रह गया। बेशक सरकार नरेन्द्र मोदी की रहेगी, लेकिन नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की बैसाखियों के सहारे चलेगी। अब देखना होगा कि नरेन्द्र मोदी का तीसरा कार्यकाल कैसा होगा, अभी अनुमान लगाना मुश्किल है।

भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में भारत को मैनुफैक्चरिंग का ग्लोबल हब बनाने, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने, 3 करोड़ और पक्के मकान बनाने, घर–घर पाइप से सस्ती रसोई गैस पहुंचाने, पीएम सूर्यघर योजना से बिजली बिल जीरो करने, गगनयान की सफलता से अंतरिक्ष में नया इतिहास रचने, देश में बुलेट ट्रेन लाने, बुजुर्गों को 5 लाख रुपये तक मुफ्त इलाज सुविधा देने जैसे वादे किये हैं। अब देखना है कि एनडीए

घटक इसे लागू करने देते हैं या नहीं।

यह सही है कि पूर्ण बहुमत के साथ सहयोगी दलों के साथ सरकार चलाना अलग बात होती है, जबकि उन पर निर्भर होकर शासन करना अलग बात होती है। लोकसभा के कुल 543 सीट के विरुद्ध एनडीए को 293, I.N.D.I.A. को 233 और अन्य को 17 सीट मिली है। एनडीए में भारतीय जानता पार्टी 240, शिवसेना (शिंदे गुट) 7, जनता दल (सेलुलर) 2, टीडीपी 16, जेडीयू 12, रालोद 2, जनसेना 2, हम 1, अपना दल 1, अन्य दल 12 सीट के साथ शामिल हैं। वहीं I.N.D.I.A. में कांग्रेस 99, सपा 37, टीएमसी 29, द्रमुक 22, शिवसेना (यू) 9, राजद 4, एनसीपी 8, झामुमो 3, अन्य दल 22 सीट के साथ शामिल हैं।

बिहार में कुल 40 संसदीय सीट पर एनडीए 30, I.N.D.I.A. 9 और अन्य 1 सीट पर काबिज हुआ है। एनडीए में भारतीय जनता पार्टी 12, जदयू 12, लोजपा 5, हम 1 के साथ शामिल हैं। I.N.D.I.A. में राजद 4, कांग्रेस 3, माले 2 शामिल है। वहीं अन्य में निर्दलीय 1 शामिल है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने दो कार्यकाल पूर्ण कर चुके हैं और तीसरे कार्यकाल का शुभारंभ करने की शुरुआत कर चुके हैं। उन्होंने अपने दो कार्यकाल में देश को सुख, समृद्धि और शांति के रास्ते पर आगे बढ़ाया है। भारत की प्रगति को देखकर अनेक देशों को तकलीफ के साथ अचंभित होना पड़ा है। कश्मीर से धारा 370 हटाकर उसका भारत में पूर्ण विलय करना, पड़ोसी देशों के अल्पसंख्यकों पर अत्याचार को समाप्त करने के लिए CAA लागू करना, जीएसटी लागू करना, भव्य राम मंदिर का निर्माण करना, नकदी प्रचलन को समाप्त करने के लिए विमुद्रीकरण करना, अटल सेतु–भारत का सबसे लंबा समुद्री पुल बनाना, सुदर्शन सेतु–भारत का सबसे लंबा केबल ब्रिज बनाना, चिनाब ब्रिज–दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज बनाना, अटल सुरंग–विश्व का सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग बनाना, देश के लिए उपलब्धि ही तो है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 10 वर्षों के कार्यकाल में देश के विकास के कार्यों को कर के यह साबित कर दिया है कि ऊर्जाहीन नेता देश की आभा और अस्मिता के लिए कलंक साबित होते हैं। तेजहीन और अयोग्य नेता राष्ट्र के पौरुष के लिए अभिशाप बन जाते हैं।

नरेन्द्र मोदी ने देश को राजनीतिक स्थिरता के दौर में लाया है और उसे राजनीतिक रूप से अस्थिर करने के लिए विपक्ष ने मोदी सरकार की उपलब्धियों को नगण्य करके आम लोक सभा चुनाव में लोगों के सामने बेरोजगारी जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया और विपक्षी पार्टियाँ गोलबंद होकर राजनीति चाल चलने लगी, जिसे भाजपा का कोई भी रणनीतिकार समझ नहीं पाया।

राजनेताओं ने राजनीतिक सियासत आरोप–प्रत्यारोप के साथ देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि देश को बड़ी वैश्विक शक्ति बनाने के लिए अगले पांच साल महत्वपूर्ण है, इसलिए वैश्विक हालात से निपटने के लिए सक्षम सरकार जरुरी है। युवा और महिला मतदाता एनडीए की ताकत बनकर उभर रहे हैं। वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा था कि भारत का लोकतंत्र आने वाली पीढ़ियों का भविष्य तय करेगा, इसलिए एक एक वोट कीमती हैं, बाहर निकले और मतदान करें। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा था कि यह मामूली चुनाव नहीं है, यह देश और संविधान को बचाने वाला चुनाव है। भाजपा नेता शिवराज सिंह चौहान ने कहा था कि जनता कांग्रेस के इरादे को कभी कामयाब नहीं होने देगी। एनसीपी नेता प्रफुल्ल पटेल ने कहा था कि राहुल गांधी या विपक्ष के नेता जो भी बोले, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जनता जिस खुशी के साथ मतदान कर रही है और जो माहौल है, वह प्रधानमंत्री मोदी और एनडीए की विजय का प्रतीक है। लोक जनशक्ति पार्टी मुखिया पशुपति कुमार पारस ने कहा था कि मोदी को प्रधानमंत्री बनाने में बिहार भी बड़ी भूमिका निभाएगा। इंडिया गठबंधन केवल हवा में है और हवा में ही उड़ जायेगा। परिणाम सबके सामने है। एनडीए को बहुमत मिला लेकिन बीजेपी को नहीं, I.N.D.I.A. को तो बहुमत ही नहीं मिला, लेकिन इतनी ताकत अवश्य मिली है कि सरकार को चलाने में विपक्ष अपनी अहम भूमिका निभायेगा, जिससे सरकार अपने को हमेशा असहज महसूस करेगी। ❐

इंस्पायरिंग मदर्स 2024 में सीमा सिंह और सोनाली बेंद्रे द्वारा विभिन्न महिलाओं को सम्मानित किया गया

मुंबई ब्यूरो, 13 मई, 2024: बिजनेसवुमन और सामाजिक कार्यकर्ता सीमा सिंह ने मेघाश्रय फाउंडेशन के माध्यम से मदर्स डे के अवसर पर मुंबई में इंस्पायरिंग मदर्स 2024 की मेजबानी की।

इस खास मौके पर सीमा सिंह, मेघा सिंह और श्रेय सिंह ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के बारे में बात की।. सामाजिक कल्याण और खेल में उत्कृष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सोनाली बेंद्रे भी शामिल हुईं।
श्रेय सिंह एवं डॉ. मेघा सिंह ने कार्यक्रम के अंतर्गत मातृ दिवस पर एक पैनल चर्चा का नेतृत्व किया।
आईपीएस आरती सिंह, डॉ. प्रिया कुलकर्णी, श्रीमती ललिता बाबर, डॉ. रेशमा पाई, आईआरएस बीना संतोष, मधु बोहरा, मंजू लोढ़ा, डॉ. मनुश्री पाटिल, दोशिवानी पाटिल, रोमा सिंघानियां, डॉ. मिन्नी बोधनवाला, डॉ. शिवानी पाटिल को इंस्पायरिंग मदर्स 2024 समारोह में सम्मानित किया गया।
सीमा सिंह मेघाश्रय फाउंडेशन की संस्थापक हैं। सीमा सिंह अपने बच्चों, डॉ. मेघा की मदद से अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रमो की योजना बनाना जारी रखती हैं। अपने बच्चों की याद में डॉ. मेघा सिंह और श्रेय सिंह, सीमा सिंह ने मेघाश्रय फाउंडेशन की स्थापना की। मेघाश्रय फाउंडेशन भारत में भूखों को खाना खिलाने और गरीब बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करता है।
विभिन्न पहलों के माध्यम से, इसने अब तक भारत में पाँच लाख से अधिक लोगों के जीवन में सुधार किया है।

इस मौके पर सीमा सिंह कहती हैं, 'इंस्पायरिंग मदर्स 2024 के माध्यम से मेघाश्रय फाउंडेशन के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय काम करने वाली महिलाओं को सम्मानित करने का यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर है। मैं देश के कई हिस्सों में जरूरतमंद बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करती हूं और समाज में बड़े पैमाने पर वंचित और जरूरतमंद बच्चों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित करना चाहती हूं।' ❐

पटना नगर निगम ने आयोजित किया युवा मतदाता जागरूकता समर कैंप

पटना ब्यूरो, पटना नगर निगम द्वारा आयोजित इंडियन वोटर्स लीग के मंच पर आयोजित मतदाता जागरूकता समर कैंप में भाग लेने वाले बच्चों और दूसरे लोगों को पटना नगर निगम के आयुक्त अनिमेष कुमार पाराशर तथा पटना नगर निगम स्वच्छता जागरूकता अभियान की ब्रांड एंबेसडर डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने प्रमाण पत्र और पुरस्कार दिए। इस अवसर पर इंडियन क्रिकेट टीम के पूर्व सदस्य अमीकर दयाल, इंदिरा आईवीएफ के बिहार हेड डॉ दया निधि, पटना नगर निगम के मेंबर इंद्रदीप कुमार चंद्रवंशी, डॉ आशीष सिंहा, मुख्य वित्त अधिकारी प्रवीण सिंहा आदि उपस्थित रहे। नृत्य प्रशिक्षण के लिए निहारिका कृष्ण अखौरी और संगीत प्रशिक्षण के लिए राजेश केसरी को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। युवा मतदाता जागरूकता समर कैंप में लोगों को नृत्य, पेंटिंग, क्राफ्ट आदि का प्रशिक्षण दिया गया और मतदाता जागरूकता कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। विभिन्न विधाओं में पुरस्कृत होने वाले प्रतिभागियों में करिश्मा कुमारी, निराला, आरती कुमारी, दिव्या सिंह, राजन कुमार, राजू कुमार सिंह आदि को गायन में, सौम्या, साक्षी, अनिका, अंशिका, अमन समीर, वीर रोहित, शूरवीर, रवि, बिट्टू को नृत्य में तथा एहसास और कायनात को पेंटिंग में पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए पटना नगर निगम के आयुक्त अनिमेष कुमार पाराशर ने कहा कि लोकतंत्र का सबसे बड़ा त्यौहार चुनाव होता है। 1 जून को पटना साहिब और पाटलिपुत्र लोकसभा के लिए चुनाव होने वाला है। सभी पटना वासी अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें। 1 जून को सभी अपने–अपने पोलिंग बूथ पर समय से उपस्थित होकर मतदान करें और लोकतंत्र के पर्व को सफल बनाएं। लोक गायिका एवं पटना जिला की स्वीप आईकॉन डॉ. नीतू कुमारी नवगीत ने अनेक सुमधुर गीतों की प्रस्तुति करके पटना के लोगों को मतदान प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

फतुहा में नुक्कड़ नाटक मोदी की गारंटी का मंचन

पटना ब्यूरो, 31 मई 2024, फतुहा विधानसभा, पटना साहिब लोकसभा के अंतर्गत आने वाले बरकी चिपुरा हरिजन टोली मे कला संस्कृति प्रकोष्ठ, भाजपा, बिहार द्वारा निर्देशित नुक्कड़ नाटक 'मोदी की गारंटी' मशहूर अदाकारा नेशनल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त रूबी खातून के नेतृत्व में संपन्न हुआ.

नाटक के पश्चात कलाकारों को विशेष तौर पर प्रोत्साहित सम्मानित किया प्रकोष्ठ के संयोजक वरुण सिंह ने।

मॉरीशस: भारत से हजारों किलोमीटर दूर एक भारत

✍ मनोज भावुक
साहित्यकार, संपादक, कवि एवं टीवी पत्रकार

भारत से छह हजार किलोमीटर दूर भी एक भारत है। उसे मिनी भारत कहा जाता है। मकर रेखा पर स्थित इस देश को 'हिन्द महासागर का मोती' कहा जाता है। इस देश के संदर्भ में मार्क ट्वेन ने कहा था कि– 'ईश्वर ने पहले यह देश बनाया और फिर उसमें से स्वर्ग की रचना की।' इस देश का नाम मॉरीशस है। भारतीय मूल के सर शिवसागर रामगुलाम ने मॉरीशस को औपनिवेशिक शासन से आजादी दिलाने में अगुआई की थी। आज भी यहाँ हिन्दी और भोजपुरी का प्रचलन देखकर विदेशी जमीन पर भारतीय मिट्टी की महक महसूस की जा सकती है।

मॉरिशस से हाल ही में लौटा हूँ। वहाँ 'अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव' था जिसका उद्घाटन मॉरिशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ और समापन राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन ने किया। स्वागत और धन्यवाद ज्ञापन भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की चेयरपर्सन डॉ. सरिता बुधू ने की। कला और संस्कृति विरासत के मंत्री अविनाश तिलक ने कहा कि यह महोत्सव हमारे पूर्वजों को श्रद्धांजलि है।

भारत ही नहीं सभी गिरमिटिया व इंडियन डायस्पोरा देशों की भाषा है भोजपुरी

दरअसल भारत ही नहीं सभी गिरमिटिया व इंडियन डायस्पोरा देशों की भाषा है भोजपुरी। तो अब भोजपुरी एक ऐसा गाँव बने जिसमें सभी गिरमिटिया व इंडियन डायस्पोरा देशों के युवा चौपाल लगायें और साहित्य, संस्कृति, संगीत, सिनेमा का लेन–देन करें। यह बात जब मैंने मॉरिशस के कला व संस्कृति विरासत मंत्रालय के युवा व साहित्य–संस्कृति प्रेमी मंत्री श्री अविनाश तिलक जी से कही तो उन्होंने कहा कि ऐसा हो तो कमाल हो जाये। यह सच है कि पूरी दुनिया में भारत बिखरा हुआ है।

प्रवासी सम्मेलन में प्रधानमंत्री का वादा

दरअसल 2019 में प्रवासी सम्मेलन बनारस में प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ ने इस महोत्सव के लिए घोषणा की थी जो कोविड की वजह से टलते–टलते 2024 में संभव हो पाया। पहली बार किसी देश की सरकार ने भोजपुरी महोत्सव का आयोजन किया। प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद इसी आयोजन के लिए हमने भोजपुरी जंक्शन पत्रिका का 'गिरमिटिया विशेषांक' निकाला जिसमें भारत के साथ मॉरिशस के लेखकों ने भी अपना योगदान दिया। यह अंक प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, कला व संस्कृति विरासत मंत्री समेत तमाम गणमान्य लोगों को भेंट किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी में भारत–मॉरिशस के लेखकों की भोजपुरी पुस्तकों के साथ भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के 30 से अधिक विशेषांक शामिल थे।

अप्रवासी दिवस कार्यक्रम 2014

यह मॉरीशस की मेरी दूसरी यात्रा थी। इससे पहले वर्ष 2014 में गया था। उस साल तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी भी गईं थीं। कार्यक्रम नवंबर के पहले सप्ताह में हुआ था। 2 नवंबर को मॉरीशस में अप्रवासी दिवस मनाया जाता है क्योंकि आज से करीब 190 साल पहले 1834 में इसी दिन एटलस नाम का जहाज भारतीय मजदूरों को लेकर मॉरिशस पहुंचा था। इन लोगों में ज्यादातर लोग यूपी और बिहार के थे।

इन लोगों को गिरमिटिया कहा जाता है। गिरमिट शब्द एग्रीमेंट का बिगड़ा हुआ रूप है। तब, भारतीय मजदूरों से एक एग्रीमेंट (गिरमिट) पर अंगूठा लगवाया जाता था और इन्हें समुद्र के रास्ते दूसरे देशों को भेज दिया जाता था। देसी भाषा में एग्रीमेंट बोलना मुश्किल है इसलिए उसे गिरमिट कहते थे और गिरमिट के तहत जाने वाले लोग गिरमिटिया कहलाए।

सोना त ना मिलल बाकिर देश सोना हो गइल

तब मैंने भोजपुरी में एक लेख लिखा था– ''सोना त ना मिलल बाकिर देश सोना हो गइल''। लिखा था कि ''अंगरेजवा इहे नू कहले रले सन कि सोना मिली त सोना लेखां अपना मेहरारू आ बाल–बच्चा के छोड़ के लोगबाग चल दीहल। अंगरेजवा इहो कहले रले सन कि गंगा सागर पार करे के बा आ हिन्द महासागर हेला देलन स। धोखा से शुरू भइल कहानी यातना, जुर्म, प्रताड़ना आ लोर के समुन्दर में डूब गइल। बाद में त लोरवो सूख गइल। अंगरेजवा गिरमिटिया लोग के तोड़े सन आ गिरमिटिया लोग पत्थर तूड़े। पत्थर सोना भइल आ मॉरिशस सोना के देश... धरती के स्वर्ग।

गिरमिटियाः सियाह रात के सोनहुला भोर

एक और लेख लिखा था ''गिरमिटिया : सियाह रात के सोनहुला भोर''। उस लेख का कुछ अंश पढ़िए – ''बिहार में का बा, यूपी में का बा, बम्बई में का बा, इण्डिया में का बा, उनका में का बा, इनका में का बा.... त ए जिनिगिये में का बा ??? .. आ जब कतहूँ कुछ हइलहीं नइखे तब हाय–हाय में का बा ? हमनिये के पूर्वज जहवाँ कुछुओ ना रहे, उहाँ ई ना गवलें कि का बा ? का बा ? ... . अपना श्रम आ जिजीविषा से ओकरा के स्वर्ग बना देलें– धरती के स्वर्ग– मॉरिशस।

गिरमिटिया लोगों के वंशज आज सत्ता पर काबिज हैं, मॉरिशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद–टोबैगो सब जगह। कहने का मतलब जहाँ कुछ भी नहीं था, वहाँ अपनी सरकार, आपनी सत्ता है। जहाँ आदमी गुलाम बनकर गया था, सत्ताधारी बन गया। मजदूर बनकर गया था, मालिक बन गया। गिरमिटिया बनकर गया था, गवर्नमेंट बन गया। ''अँगरेजवा सोना के लालच देके सोना जइसन जिनिगी बर्बाद कइलन स बाकिर ओह बर्बादी के राख पर दुनिया के बगइचा में मॉरिशस जइसन खूबसूरत फूल खिलल बा जवना के खुशबू से सउँसे दुनिया गमगमा रहल बा।''

जमीन को त्यागना बड़ी बात नहीं है, जमीन के साथ जो रिश्ता है, उसको त्यागना पीड़ादायक होता है। खुशी की बात है कि मॉरीशस ने उस

रिश्ते को नहीं त्यागा। आज भी मॉरीशस के भीतर भारत धड़कता रहता है।

"ऊख रोपे गइल लोग। ओह लोग के अपना जिनगी के रस आ मिठास खतम हो गइल। ऊख में रस भरे लागल, मिठास बढ़े लागल, मॉरिशस लहलहा गइल। धरती के स्वर्ग बन गइल।"

मॉरिशस में है आरा, बलिया, छपरा

भारत और मॉरिशस के बीच सिर्फ हिन्द महासागर की दूरी का अंतर है। करीब छह हजार किलोमीटर की दूरी, बाकी यहाँ के किसी गांव में चले जाइए, लगेगा भारत के आरा, बलिया, छपरा चाहे आजमगढ़ के किसी गांव में हैं। सिर्फ फ्रेंच या क्रियोल के शब्द कान में पड़ने से हम उनसे खुद को अलग नहीं कर सकते। मेरा जन्म बिहार के सिवान जिला में हुआ है, रेणुकूट, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश में पला–बढ़ा हूँ लेकिन मुझे मॉरिशस, तमिलनाडु, केरला, कर्नाटक चाहे असम से ज्यादा अपना लगता है। पता है क्यों? क्योंकि हमारी भाषा एक है, संस्कृति और संस्कार एक है। भाषा भौगोलिक दूरी मिटा देती है। जगजाहिर है कि मॉरिशस की दो तिहाई से भी ज्यादा आबादी भोजपुरी बोलती है। तो मॉरीशस भोजपुरी–हिन्दी कनेक्शन की वजह से अपना सा लगता है। (इसका अर्थ ये कदापि न लगाया जाय कि तमिलनाडु, केरला, कर्नाटक

चाहे असम पराया सा लगता है। भाई पूरा हिंदुस्तान अपना है, प्रिय है लेकिन समान भाषा और संस्कृति की वजह से मॉरीशस भी अपना भारत ही लगता है, बिहार और उत्तर प्रदेश ही लगता है।)

190 साल बाद भी विरासत सुरक्षित है

मॉरिशस में सनातन है, इसलिए परंपरा बची हुई है, भारत बचा हुआ है। वैसे सच कहूँ तो मॉरिशस ईस्ट और वेस्ट का मिलन केंद्र है। यहां साड़ी में लिपटी महिला दिखती है तो अत्याधुनिक लिबास में बिंदास युवती भी ...और मजे की बात यह कि किसी से किसी को कोई दिक्कत नहीं है। सभी अपने कंफर्ट जोन में हैं।

सनातन, पूजा–पाठ, मंदिर, रामायण, महावीरी झंडा, हनुमान जी, रामजी, शिवजी ...मॉरिशस में रचे–बसे हैं। इसलिए भारतीय आचार्यों की यहां बहुत पूछ है, आदर है। यहाँ रामायण सेंटर है। इस बार की यात्रा में यूपी के आचार्य राकेश पांडेय ने वहाँ सारे डेलीगेट्स का स्वागत किया। वाराणसी निवासी आचार्य रवींद्र त्रिपाठी भी अपनी पत्नी अम्बिका त्रिपाठी के साथ स्वागत–सम्मान में खड़े मिले। यहाँ गीत–गवाई अपने खाँटी भोजपुरी तेवर में है। छोटे से इस टापू वाले देश में डेढ़ सौ से ज्यादा गीत–गवाई स्कूल है। गीत–गवाई संस्था को यूनेस्को ने मान्यता दी है। हेरिटेज में शामिल किया है। सरकार ने भोजपुरी को मान्यता दी है, भले भारत में उपेक्षित है और आठवीं अनुसूची में शामिल करने का संघर्ष जारी है। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भोजपुरी बोलते हैं। भोजपुरी कार्यक्रम में रुचि लेते हैं और उद्घाटन–समापन करते हैं। यही वजह है कि 190 साल के बाद भी ग्लोबलाइजेशन के दबाव और अवरोध के बाद भी मॉरिशस में हम अपनी जड़ों से जुड़े हैं और विरासत को बचा के रखे हैं। लेकिन यह भी सच है ऐसे अनुष्ठान में सरिता बुधू जैसे लोगों को अपना पूरा जीवन देना पड़ता है। सरिता जी मॉरीशस में भोजपुरी की पर्याय हैं।

अपने पुरुखों के संघर्ष और विजय गाथा पर अपने एक गीत के अंश के साथ अपनी बात खत्म कर रहा हूँ –

हम तो मेहनत को ही हथियार बना लेते हैं
अपना हँसता हुआ संसार बना लेते हैं
मॉरिशस, फीजी, गुयाना कहीं भी देखो तुम, हम जहाँ जाते हैं सरकार बना लेते हैं।

कितनी आमदनी पर देना है कितना टैक्स, नए इनकम टैक्स स्लैब के बारे में पूरी जानकारी

✍निशांत कुमार प्रधान
इंटरनल ऑडिटर,
लेबर लॉ एडवाइजर एवं टैक्स प्रैक्टिशनर्स

अब 7 लाख तक की आमदनी वालों को टैक्स नहीं देना होगा। इससे पहले रिबेट 5 लाख रुपये तक मिलती थी। अब इसे बढ़ाकर 7 लाख रुपये तक कर दिया गया है। वेतनभोगियों को इससे फायदा मिलेगा।

नई टैक्स रिजीम के तहत इनकम टैक्स (Income Tax Slab Rates) स्लैब बदल दिय गया है। अब टैक्सपेयर्स को नए स्लैब के तहत टैक्स देना होगा।

न्यू टैक्स स्लैब में बढ़ी छूट

नए टैक्स रिजीम (New Tax Regime) के तहत अब 7 लाख रुपये तक की इनकम पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। यानी कि टैक्स रिबेट को बढ़ा दिया गया है। इससे पहले यह रिबेट 5 लाख रुपये तक मिलती थी। अब इसे बढ़ाकर 7 लाख रुपये तक कर दिया गया। वेतनभोगियों को इससे फायदा मिलेगा। 87A के तहत मिलने वाली छूट नए टैक्स रिजीम पर बढ़कर ₹ 7 लाख और छूट की अधिकतम राशि ₹ 25,000।

नया टैक्स स्लैब 2023–24

आय	नई दर
0 से 3 लाख	शून्य
3 से 6 लाख	5 फीसदी
6 से 9 लाख	10 फीसदी टैक्स
9 से 12 लाख	15 फीसदी टैक्स
12 से 15 लाख	20 फीसदी

इनकम टैक्स रिटर्न भरने के लाभ

जिस भी व्यक्ति की आय इनकम टैक्स के दायरे में आती है उसे इनकम टैक्स रिटर्न भरना चाहिए। अगर आपकी उम्र 60 वर्ष से कम है और आपकी आय 2.5 लाख रु. तक है, तो आपको इनकम टैक्स भरने की आवश्यकता नहीं है।

ऐसा देखा गया है कि कई नौकरीपेशा व्यक्ति ये सोचते हैं कि उनकि सैलरी से TDS काट लिया गया है इसलिए उनकी जिम्मेदारी खत्म हो गयी। इनकम टैक्स रिटर्न भरना और इनकम टैक्स जमा करना, ये दोनों अलग काम हैं। अगर आप टैक्स के दायरे में नहीं आते हैं, तब भी आपको आयकर रिटर्न भरना चाहिए। आयकर रिटर्न भरने के कई लाभ होते हैं:

- लोन लेने में आसानी होती है।
- वीसा लगवाने के लिए रिटर्न भरना अनिवार्य है।
- अचल संपत्तियों का तुरंत रजिस्ट्रेशन संभव है।
- जब तक कोई आवेदक अपना रिटर्न नियमित रूप से नहीं भरता, बैंक उसे क्रेडिट कार्ड नहीं देता।
- इनकम टैक्स रिटर्न जमा करने से आयकर विभाग के साथ एक रिकॉर्ड स्थापित करने में मदद मिलती है।

❒

मोक्षदायिनी केतु

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ

कुंजवत केतु यानी केतु मंगल ग्रह के समान कार्य करने वाला छाया ग्रह है, जिसका स्वभाव क्रूर है। केतु तर्क, बुद्धि, ज्ञान, वैराग्य और मानसिक गुणो का कारक है। धनु राशि केतु की उच्च राशि है और मिथुन इसकी नीच राशि है। मनुष्य के शरीर में केतु अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस प्रकार हम राहु को नहीं देख सकते इस प्रकार केतु को भी नहीं देख सकते हैं बल्कि इसका केवल अनुभव कर सकते हैं। राहु की तरह इनका भी अपना कोई फल नहीं होता है। यह जिस ग्रह के साथ रहते हैं या जिस राशि में बैठते हैं उसी ग्रह या राशि स्वामी के अनुसार फल देते हैं। राहु की तरह केतु भी फल देने में आकस्मिकता रखते हैं। किसी स्वराशि ग्रह के साथ रहने पर उसके बल में वृद्धि करते हैं। मंगल और केतु की युति होने पर मंगल के बल को दुगना कर देते हैं। केतु से प्रभावित व्यक्ति बहुत जल्दी क्रोधित होते हैं। केतु प्रकृति में तमस हैं। केतु 27 नक्षत्र में अश्विनी, मघा और मूल नक्षत्र के स्वामी हैं। केतु की महादशा 7 साल की होती है।

अगर इनकी आकृति का विचार किया जाए तो इनकी आकृति सर्प के पूंछ के आकार का म्लेच्छ वर्ण, नपुंसक ,वायु तत्व ,ठंडा, तीक्ष्ण ,दक्षिण पश्चिम दिशा का स्वामी, धुएं जैसे रंग वाला एक वृद्ध पाप ग्रह है।

केतु भी राहु की तरह एक राशि में डेढ़ वर्ष रहते हैं इस प्रकार 12 राशियों को पार करने में इन्हें 18 वर्ष का समय लगता है।

व्यावहारिक तौर पर यह देखा गया है कि केतु आध्यात्मिकता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करता है, इसीलिए इसे मोक्ष दायिनी भी कहा गया है।

केतु यदि शुभ ग्रह के साथ या शुभ ग्रह की राशि में रहते हैं तो उनकी दशा में सुख की प्राप्ति होती है, शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ने पर भी अच्छा फल प्रदान करते हैं। ठीक इसके विपरीत केतु यदि पाप ग्रह के साथ होते हैं या पाप ग्रह की दृष्टि पड़ती है तो अति कष्टदायक फल देते हैं।

राहु की तरह केतु भी कुंडली के शुभ स्थिति में रहने पर व्यक्ति को उच्च पद की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करते हैं। व्यक्ति को अच्छा खिलाड़ी, इंजीनियर, डॉक्टर,नेता ,मंत्री ,पुलिस या फौजी अफसर भी बनाते हैं।

केतु के अशुभ स्थिति में होने पर मानसिक तनाव ,क्लेश एवं तरह–तरह की बीमारियों से जूझना पड़ता है जैसे घाव होना, चोट लगना, बहरापन ,तोतलापन, अंडकोष के रोग आदि। केतु अशुभ हो तो संगत खराब हो जाती है और बुरी आदतें लग जाती हैं।

केतु का सभी भाव में भाव फल निम्नवत हैः

(१) लग्न में बैठा हुआ केतु मस्तिष्क से संबंधी बीमारी देता है,

(२) द्वितीय भाव में बैठा हुआ केतु मुंह से संबंधित बीमारी देता है तथा व्यक्ति में विरोधी अवगुण भरता है,

(३)तृतीय भाव का केतु सब प्रकार के बाधाओ का समाप्त करके जातक को राज सुख देता है,

(४) चतुर्थ भाव का केतु पिता की आयु को कम करता है तथा व्यक्ति को चंचल ,अस्थिर व अशांत करता है,

(५) पंचम भाव का केतु संतान सुख के लिए बाधा उत्पन्न करता है,

(६)छठे भाव का केतु व्यक्ति को निरोगी बनाता है,

(७) सातवें भाव का केतु दांपत्य जीवन में उथल–पुथल की स्थिति पैदा करता है ,

(८)आठवें भाव का केतु बवासीर, भगंदर जैसे रोगों को उत्पन्न करता है ,

(९) नौवें भाव का केतु व्यक्ति को धर्म के मार्ग से विचलित करता है,

(१०) दशम भाव का केतु पिता और माता के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है,

(११) एकादश भाव का केतु संतान के लिए हानिकारक होता है। उसे संसार के माया मोह से विरक्ति होती है ,

(१२) द्वादश भाव का केतु मोक्ष प्रदान करने में सहायता प्रदान करता है ।

केतु जनित कष्ट के निवारण एवं शांति हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैः

(१) काला–सफेद कंबल मंदिरों में दान करें,

(२) क्षाग दान करें,

(३) शिवलिंग पर गाय का दूध अर्पित करें,

(४) गणेश जी को दूर्वा अर्पित करें,

(५) अपना चाल चलन ठीक रखें एवं लोगों के साथ अच्छा व्यवहार रखें,

(६) कुत्ते की सेवा करें एवं कुत्ते को रोटी खिलाएं। ❐

न्यास योग

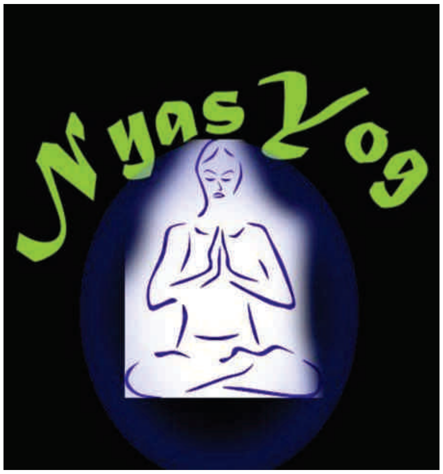

✍ **उत्तरा कुमारी**
स्नातकोत्तर विज्ञान
न्यास ग्रैंड मास्टर

न्यास योग एक आध्यात्मिक और सांसारिक प्रक्रिया है। वेदों में, शिवमानस पूजा आदि में न्यास की प्रक्रिया का पूर्णतः उल्लेख हम सभी देखते हैं।

न्यास शब्द की उत्पत्ति 'नि' (नीचे या अंदर) और क्रिया धातु 'अस' (फेंकना, प्रक्षेपित करना) से हुई है। यानि न्यास का शाब्दिक अर्थ है, रखना और फेंकना, यानि कि व्यवस्थित करना। सच पूछा जाय तो साधारण शब्दों में न्यास यानि कि किसी चीज को व्यवस्थित करना।

दुर्गा सप्तशती में भी न्यास योग की चर्चा है, दुर्गा पाठ दुर्गा के मंत्रों से न्यास करना ज्यादा कारगर माना जाता है। कई ब्राह्मण देवता जब हमारे घर पर कोई पूजा करवाते हैं तो न्यास भी करवाते हैं। इस न्यास के द्वारा हमारे शरीर का शोधन कराया जाता है। ठीक उसी तरह हमारे जीवन शैली को व्यवस्थित करने की भी ये एक प्रक्रिया है। हम सभी जानते हैं हमारा शरीर एक ऊर्जा का पिंड है। हमारे शरीर में 7 ऊर्जा चक्र कार्य करते हैं। इन चक्रों की क्रियाशीलता ही हमारे शरीर को व्यवस्थित रूप से चलाते हैं, इन चक्रों में जब असंतुलन होता है तो हमारी आध्यात्मिक, सांसारिक और आर्थिक स्थिति प्रतिकूल होने लगती है। न्यास करके हम इन विपरीत परिस्थितियों पर काबू पा सकते हैं।

उच्च कुल में जन्मे डॉ. बी. पी. साही बाल्यावस्था से ही पूजा पाठ में लीन रहने वाले, सांसारिक सुख सुविधा से दूरी बनाए रखने की प्रवृत्ति वाले महान उपासक ने जनकल्याण के लिए न्यास पद्धति की स्थापना की। बहुत शोधों से गुजरने के बाद उन्होंने कुछेक नियमों के साथ मानव जीवन को सुगम बनाने की इस प्रक्रिया को स्थापित किया है। इस न्यास की व्यवस्था में चलकर आज देश विदेश में और भारत के कई राज्यों में लोग अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पा रहे हैं। कैंसर जैसे रोगों में भी कई साधक इस से लाभान्वित हो रहे हैं और भी कई क्षेत्र जैसे मानसिक, आर्थिक, पारासायकिक आदि में भी इसका लाभ देखा जा रहा है।

न्यास योग एक गुरुः शिष्य पद्धति है, इसे कहीं से सुनकर या पढ़कर नहीं सीखा जा सकता है। न्यास योग एक अति प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। ये वेदों से निकली योग एवं तंत्रों की परंपरा से विकसित हुई है। वर्षों से इसे गुप्त रखा गया था किन्तु अब यह सबों के लिए प्रस्तुत है।

डॉ. बी. पी. साही ने इस पद्धति को जन साधारण के लिए 39 वर्षों पूर्व उपलब्ध कराया। जैसा कि मैंने उल्लेख किया कि वे बाल्यावस्था से ही महान साधकों, सिद्ध योगियों, महात्माओं एवम आध्यात्मिक चिकित्सकों के संपर्क में रहे, 35 वर्ष की उम्र में उन्होंने साधना के क्षेत्र में पूर्णता हासिल कर ली थी। गुरु द्वारा शिक्षण की पूर्ण स्वतंत्रता के बावजूद इन्होंने अपने को छुपाकर रखा। सन 1985 में बंबई अस्पताल के डॉ रमाकांत केनी जो एक विश्व विख्यात आध्यात्मिक चिकित्सक हैं, कि प्रेरणा एवम सिद्ध साधकों की आज्ञा से गुरु जी ने अपने संस्थान में, जिनके ये संस्थापक निदेशक भी थे, न्यास का शिक्षण प्रारंभ किया । गुरु जी कई भाषा के पूर्ण ज्ञाता थे, जैसे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, जर्मन आदि। ये एंजिल थेरेपी, क्रिस्टल थेरेपी, रेकी, न्यास, EFT, करुणा रेकी, टेरा माई आदि आध्यात्मिक चिकित्सा में प्रवीण थे। इनका सानिध्य और आशीष मुझे 19 वर्षों तक मिला।

इनके जीवन का एक मात्र उद्देश था सभी लोगों के लिए इस पद्धति को सुलभ करना, जिससे देश के सभी स्तर के लोगों में प्रेम, सहानुभूति और शांति का विकास हो। उनके अंतिम सांसों तक में मुझे न्यास के प्रति उनका समर्पण दिखा था। आज भी इनका संस्थान कार्यरत है और इसके निदेशक का कार्यभार इनकी पुत्र वधू सुमिता साही बखूबी कर रही हैं। मैं भी यहाँ अपना श्रमदान ग्रैंडमास्टर के रूप में कर रही हूं। इंस्टीट्यूट ऑफ हीलिंग के नाम से बी. एन. कॉलेज के पीछे अंटा घाट में यह संस्थान चल रहा है। ❐

लघुकथा : मॉर्निंग टी

✍ मृत्युंजय कुमार मनोज
पता – निराला एस्टेट
टेकजोन–4, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम) उ.प.–201306

'अजी, उठिए न। आज आपके हाथ की बनी चाय पीनी है। बहुत दिनों से आपके हाथ से बनी चाय नहीं पी है' –रूपा ने कंबल के अंदर से विकास को हिलाते हुए कहा। 'ओह!अरे यार! संडे है। सोने दो। तुम खुद बना लो'–विकास ने अधजगे अवस्था में जवाब दिया। 'ओ माय डार्लिंग, प्लीज'– रूपा ने प्यार से कहा। 'ओह हो! तुम भी न। चलो बनाता हूं'– विकास ने बिस्तर से उठते हुए कहा।

फरवरी का महीना। गुलाबी सर्दी वाली सुबह। नोएडा के पैराडाइज सोसायटी में विकास का 'प्रेम निवास'। शादी को दस बरस बीत चुके हैं।

बालकनी में सुबह की खिली–खिली धूप। 'धूप कितनी अच्छी लग रही है न' –चाय की चुस्की लेते हुए रूपा ने कहा। 'क्या बात है? कुछ डिमांड तो नहीं? आज मुझ पर बड़ा प्यार आ रहा है। ऐसे तो इतने बरसों में कभी ढंग से मेरी तारीफ भी नहीं की' –विकास ने कहा।

'ओह हो! इतनी शिकायतें। तुम नहीं समझोगे। स्त्रियां खुलेआम पति की तारीफ नहीं कर सकती। लोग नजर लगा देंगे। मैं दिखावा नहीं करती। इस मॉर्निंग टी को ही ले लो। यह महज चाय नहीं है, तुम्हारे साथ होने का, तुम्हारे प्यार का, केयरिंग होने का एहसास है। आज के भाग–दौड़ वाले समय में तुम्हारे साथ मॉर्निंग टी एक अलग सुकून एवं आनंद देता है। यही छोटे–छोटे पल जिंदगी में रिश्तों को जीवंत बनाते हैं, उसके गरमाहट को बनाए रखते हैं' –चाय की चुस्की लेते हुए रूपा ने जवाब दिया।

सूरज की रोशनी में रूपा की अलग छवि को विकास निहारे जा रहा था। मार्निंग टी की चुस्की और मिठास के साथ न जाने कितनी गलतफहमियां और करवाहटें घुलती जा रही थीं।

❐

आलेख : व्यक्तित्व की सुंदरता

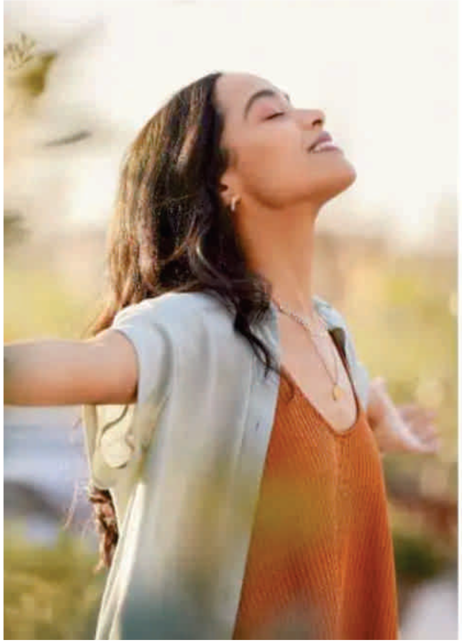

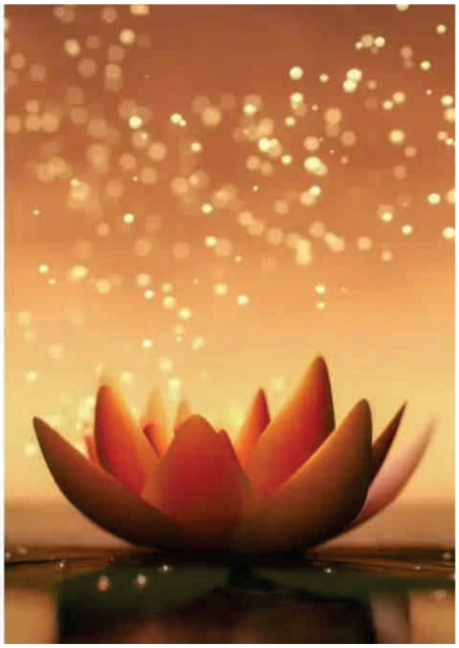

✍ अम्बिका कुमारी कुशवाहा
पटना (बिहार)

एक स्मार्ट सूंदर लड़के को ये कैसी बदसूरत लड़की पसंद आई है ?
इतनी सुंदर लड़की है बिल्कुल अप्सरा जैसी.. पर ये कैसे बदसूरत काले लड़के को पसंद की है? जरूर लड़का पैसों वाला अमीर है, लड़की पैसों की लालची है।
आग सी चिलचिलाती धूप में इतनी सुंदर स्त्री ग्राउंड ड्यूटी कर रही है। काबिले तारीफ है। (दूसरी तरफ अनेकों महिला दिन रात धूप हो या बरसात अपने परिवार के लिए और स्वयं के लिए घर से बाहर बिना मेकअप और बिखरे बाल के साथ मजदूरी किये जा रही हैं ये लोगों को नही दिखता)

ये है खूबसूरती और रंग रूप को देखकर हमारे समाज द्वारा व्यंग्य।

हम जिस समाज के बीच रहते हैं, वहां लोग सीरत नही बल्कि सूरत से अधिक प्रभावित होते हैं। यही कारण है आजकल स्त्री हो या पुरुष खुद को सुंदर बनाने के लिए अनेकों तरह के तरीके इस्तेमाल करते हैं और खोजते रहते हैं। कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नही होता है। कुछ हद्द तक कृतिम चीजें हमे सुंदर जरूर बनाती हैं लेकिन हमारी आत्मिक सोच सुंदर नहीं हो तो हमारे व्यक्तित्व की खूबसूरती ऊर्जावान नहीं हो पाती है। हर व्यक्ति स्वयं में सुन्दर और खास होता हैं। बशर्ते वो किसी के बारे में गलत न सोचता हो एवं गलत चीजों का अनुसरण न करे। कभी भी हमे स्वयं को कम नहीं समझना चाहिए और खुद की तुलना दूसरों से ना करें। हमे अपनी सोच को बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिए। गलत सोच और कार्य हमारी बुद्धि और व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। ये जरूरी नहीं कि कोई व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए गलत रास्ते या चीजों का इस्तेमाल कर रहा है तो हम भी अपनी प्रगति और प्रतिष्ठा के लिए उसका अनुसरण करें। गलत लत और सोच हमारे जीवन को बर्बाद कर देती हैं, ऐसे लोग हमेशा दूसरों के प्रति और स्वयं के प्रति भी नेगेटिव सोच और अशांति से घिरे होते हैं। व्यक्ति की वास्तविक खूबसूरती उसके सुंदर मन, कर्म और वचन से होती है। और ऐसे व्यक्ति सभी के प्रति दया और प्रेम से परिपूर्ण होते हैं। ये ऐसी अनमोल सुंदरता है जो उम्र और समय के साथ कभी खत्म नही होती है। जैसे जैसे हम अपने जीवन में सीखते हैं और अच्छी चीजों का अनुसरण कर आगे बढ़ते हैं तो हमारी मन की खूबसूरती के साथ साथ हमारे व्यक्तित्व की सुंदरता निखरती है। कोई व्यक्ति गोरा हो, अश्वेत हो, लंबा हो, छोटा हो आदि किसी तरह की कमियों द्वारा कभी भी किसी व्यक्ति की सोच, समझ और भविष्य का अनुमान लगाकर कटाक्ष नहीं करना चाहिए। साधारण से दिखने वाले व्यक्ति ने हमेशा खुद को साबित कर अपनी कहानियां लिखी हैं, ये दुनिया जानती है।

एक बेहतरीन सुन्दर सोच हमारी प्रथम खूबसूरती है। जो हमारे व्यक्तित्व को सहज और प्रेमपूर्ण बनाती है। ❐

कांस फिल्म फेस्ट में राजपाल यादव के साथ जारी हुआ अभय सिन्हा की फिल्म 'संयोग' का पोस्टर व ट्रेलर

मुंबई ब्यूरो, यशी फिल्म्स और अभय सिन्हा प्रस्तुत एक अनोखी पारिवारिक कहानी पर आधारित भोजपुरी सुपर स्टार दिनेश लाल यादव निरहुआ और आम्रपाली दुबे की फिल्म 'संयोग' अब कांस इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में पहुंच चुकी है, जहां बॉलीवुड सुपरस्टार कॉमेडियन राजपाल यादव ने अभय सिन्हा की मौजूदगी में इस फिल्म का पोस्टर और ट्रेलर प्रदर्शित किया। आपको बता दें कि इस बार कांस फिल्म फेस्टिवल में भोजपुरी समेत भारतीय भाषाओं की कई फिल्मों की स्क्रीनिंग होनी है जिसके लिए इंपा अध्यक्ष अभय सिन्हा का सराहनीय प्रयास रहा है। यही वजह है कि इस बार इस वैश्विक मंच पर भोजपुरी फिल्म संयोग की भी स्क्रीनिंग ग्लोबल दर्शकों के सामने की जाएगी।

रापचिक ऑफिसियल यूट्यूब चैनल से रिलीज फिल्म के ट्रेलर को राजपाल यादव ने देखा और उसे सराहा भी। कहा कि भारतीय फिल्म उद्योग की बात ही कुछ और है। उन्होंने कहा कि हर भाषाओं में बनने वाली फिल्म अब दुनिया भर के दर्शकों के सामने इस महोत्सव के जरिए प्रदर्शित होगी। इसमें भोजपुरी भी शामिल है, यह बेहद खुशी की बात है। वहीं अभय सिन्हा ने कहा कि इस फिल्म की कहानी सात समुन्द्र पार की धरती की है, लेकिन इसका मिजाज पूरी तरह से भोजपुरी समाज से जुड़ा हुआ है और इस फिल्म की कलात्मक प्रस्तुति की गई है जिस वजह से यह अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित की जाने लायक सर्वश्रेष्ठ फिल्म में से एक चुनी गई।

आपको बता दें कि यशी फिल्म्स प्रा. लिमिटेड प्रस्तुत फिल्म 'संयोग' के निर्माता अभय सिन्हा हैं और निर्देशक अनंजय रघुराज हैं। फिल्म के सह–निर्माता अनिल कुमार सिंह हैं। फिल्म में दिनेश लाल यादव, आम्रपाली दुबे, संजय पांडे, अनीता रावत, संजीव मिश्रा, सूर्या द्विवेदी, जे.नीलम, संतोष पहलवान मुख्य भूमिका में हैं। लेखक अरबिन्द तिवारी और पी आर ओ रंजन सिन्हा हैं। डीओपी वासु हैं। संगीतकार साजन मिश्रा व शुभम तिवारी और गीतकार अरबिन्द तिवारी, आशुतोष तिवारी, शेखर मधुर हैं। कोरियोग्राफर एम. के. गुप्ता (जॉय) और डिजिटल पार्टनर कैप्टन वीडियो प्राइवेट लिमिटेड है। ❒

संवेदनाओं को झकझोर देने वाली शानदार भोजपुरी फिल्म है 'रंग दे बसंती'

पटना ब्यूरो, एसआरके म्यूजिक प्रस्तुत ट्रेंडिंग स्टार खेसारी लाल यादव, रति पांडेय और डायना खान स्टारर भोजपुरी फिल्म 'रंग दे बसंती' देश भर के 250 से अधिक सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है, जहाँ इस फिल्म को दर्शकों का खूब अटेंशन भी मिल रहा है। फिल्म मल्टीप्लेक्स, पीवीआर और सिंगल थियेटर में भी हाउसफुल रही। आखिर इस फिल्म में क्या खास है और दर्शकों को क्या कुछ नया देखने को मिल रहा है, आईये जानते हैं।

कहानीः

निर्माता रौशन सिंह, सह निर्माता शर्मिला आर सिंह और निर्देशक प्रेमांशु सिंह की फिल्म 'रंग दे बसंती' एक प्रभावशाली भोजपुरी फिल्म है जो देश प्रेम, परिवार और संघर्ष की कहानी को बहुत ही बारीकी से चित्रित करती है. फिल्म की कहानी तीन पीढ़ियों के बीच है, जो देश प्रेम को अपने पारिवारिक और भावनात्मक रिश्ते से उपर लेकर चलती है। प्रेमांशु सिंह ने इस फिल्म की कहानी को बारीकी से कुछ इस कदर पिरोया है, दर्शकों को भरोसा ही नहीं हो पा रहा है कि भोजपुरी में भी ऐसी फिल्में बन सकती हैं। फिल्म का दमदार क्लाईमेक्स मानवीय संवेदनाओं को झकझोर देने वाला है, जो इस फिल्म को ना सिर्फ भोजपुरी बल्कि हिंदी की देशभक्ति पर आधारित बनी फिल्म से अलग बनाती है।

प्रियंका सिंह, जितेश शंकर, संध्या सरगम, अंकिता मिश्रा परब की आवाज कर्णप्रिय है और भोजपुरी टच देती मालूम पड़ती है।

निर्देशन

निर्देशक प्रेमांशु सिंह ने 'रंग दे बसंती' को एक अनोखे और मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस फिल्म से एक बार फिर से साबित कर दिया कि कैमरे की रियल से रियल लाइफ झांक कर एक आभासी दुनिया को दर्शकों के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाता है। फिल्म की सिनेमैटोग्राफी और उनके निर्देशन ने कहानी को और भी जीवंत बना दिया है। फिल्म में उनके द्वारा एक सार्थक संदेश को सरलता और संवेदनशीलता से पेश किया गया है, जो फिल्म की मजबूत कड़ी में से एक है।

अभिनयः

फिल्म में खेसारीलाल यादव ने अपने अभिनय से एक बार फिर दर्शकों का दिल जीत लिया है, उनके अभिनय की विविधता और उनके किरदार की गहराई ने फिल्म को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया है। वहीं, टीवी की दुनिया की जानीमानी अदाकारा रति पांडेय भी इस फिल्म की मजबूत कड़ी हैं, जिनकी यह पहली फिल्म है। मगर उन्होंने रति पांडेय के स्वैग को अपने एक्टिंग में जारी रखा है, तो बॉलीवुड अभिनेत्री डायना खान ने भी अपनी इस पहली फिल्म में दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। दोनों ने अपने–अपने किरदारों को बखूबी निभाया है और अपनी अदाकारी से प्रभावित किया है। इसके अलावा राज प्रेमी, आमिर सरवर, अमित तिवारी, समर्थ चतुर्वेदी, प्रकाश जैश, ज्योति कलश, संजय महानंद जैसे कलाकारों ने इस फिल्म में अपनी अदाकारी से और भी खास बना दिया है।

संगीतः

पहली बार भोजपुरी की किसी फिल्म में दलेर मेहंदी, कैलाश खेर और ऋचा शर्मा जैसे कलाकारों की आवाज सुनाई दी है, जो फिल्म के गानों को मधुर बनाती है। गानों में भोजपुरी सिनेमा की मिठास और समकालीनता का बेहतरीन संगम देखने को मिलता है। गाने कहानी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और दर्शकों को बांधे रखते हैं। इस फिल्म के संगीतकार ओम झा और कृष्णा बेदर्दी हैं, जबकि गीतकार प्यारे लाल यादव, अरबिंद तिवारी, राकेश निराला, डॉ. कृष्णा एन शर्मा, कृष्णा बेदर्दी, सत्या सावरकर हैं। फिल्म के संगीत में खेसरी लाल यादव, कल्पना, इंदु सोनाली,

निष्कर्षः

'रंग दे बसंती' एक मनोरंजक और विचारोत्तेजक फिल्म है जो भोजपुरी सिनेमा में एक नया मानदंड स्थापित करती है। खेसारीलाल यादव, रति पांडेय और डायना खान की बेहतरीन अदाकारी, प्रभावी संगीत और मजबूत निर्देशन ने इसे एक अविस्मरणीय फिल्म बना दिया है। यह फिल्म दर्शकों को न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि सामाजिक संदेश भी देती है। भले इस फिल्म को शुरुआती दौर से विवादों से गुजरना पड़ा है, लेकिन थियेटर में फिल्म दर्शकों को पसंद आ रही है। इस फिल्म ने ऐतिहासिक रिलीज के जरिये रिकॉर्ड कायम कर दिया है। ❐

प्रस्तुति : रंजन सिन्हा, पीआरओ

हमारी चुनौतियां

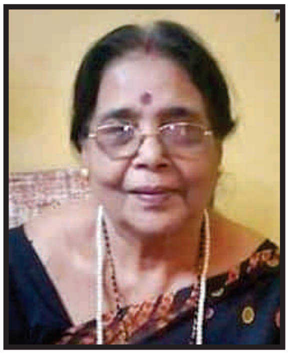

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई

संयुक्त परिवार के बिखराव के कारण या यूं कहे संयुक्त परिवार के टूटने के कारण सामाजिक परिवेश में बहुत ही भिन्नता आ गई है। परिवेश और परवरिश दो ऐसे शब्द हैं जो व्यक्तित्व के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कहा जाता है शरबत बनाने में पानी और चीनी की मात्रा संतुलित होना अति आवश्यक है नहीं तो शरबत की मिठास कम हो जाएगी तो मजा नहीं आएगा और ज्यादा मीठा हो जाए तो हानिकारक हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार परवरिश और परिवेश का हमारे जीवन में महत्व है।

पारिवारिक जीवन में कुछ ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात होती है जिनके पास समस्याओं की गठरी होती है, समाधान का तरीका ढूंढना नहीं आता और समस्याओं के जाल में उलझते उलझते ऐसा उलझ जाते हैं, कहीं ना कहीं वह बीमार पड़ जाते हैं। वस्तुतः उनकी बीमारी का कारण मानसिक होता है लेकिन समझ में यह आता है कि यह बिल्कुल ही शारीरिक है। इसी सिलसिले में एक सुझाव है, जब भी आपको समस्याएं परेशान कर रही हो वहां पर अपनी सोच में बदलाव कर उसे एक चुनौती का रूप दे दीजिए और अपनी सोच में बदलाव कर बहुत आसानी से आपके शरीर में होने वाले विकार या रोग को आसानी से कम कर सकते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि परिस्थिति जैसी भी हो उसको जितना जल्दी स्वीकार कर लेंगे उतनी आसानी से हम समस्याओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे और यह विजय आपके लिए एक नए रास्ते को दिखलाएगा।

कुछ ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिन्हें हम स्वीकार नहीं कर पाते हैं तब हमें उन्हें नजर अंदाज कर देना चाहिए।

कुछ परिस्थितियों का प्रकार इस प्रकार का होता है जिन्हें हम नियंत्रित भी कर सकते हैं और परिवर्तित भी कर सकते हैं।

इस प्रकार अपनी सोच और परिस्थितियों में परिवर्तन और बदलाव कर हम अपनी समस्याओं या चुनौतियों का सामना कर अपने हौसलों और हिम्मत को मजबूत बनाएंगे।

व्यवहार इंसान के मन का दर्पण है, इस दर्पण में आप अपनी छवि खुद नहीं देख सकते हैं लेकिन आपके सामने वाले आपके व्यवहार को देखकर आपकी मनः स्थिति का अनुमान लगा लेते हैं और मार्गदर्शन , सुझाव या परामर्श देने की कोशिश करते हैं जिनको सुनना अति आवश्यक है। अमल किया जाए या ना किया जाए यह कोई आवश्यक नहीं है पर सुनना जरूर चाहिए।

इंसान ईश्वर की अनमोल रचना है। ईश्वर ने हर इंसान को दो आंखें सामने की ओर दी हैं, शरीर के पिछले हिस्से में किसी भी प्रकार की कोई आंखें नहीं हैं। अब इस बात से यह अनुमान लगाइए कि क्यों नहीं है। इसका सीधा अर्थ यही है कि आप अतीत की दुनिया से बाहर आईये और आपके हाथ में जो वक्त है उस वक्त के अनुसार जीवन को बनाइए।

वक्त से बड़ा कोई गुरु नहीं होता, वक्त हंसाता भी है और काल बनकर रुलाता भी है। अवसर बनकर ऊंचाइयों पर पहुंचा भी देता है।

मानसिक विचारधारा को जितना संतुलित और नियंत्रित किया जाए जीवन में समस्याएं उतनी ही कम पैदा होगी।

व्यवहार कुशल वाणी में मधुरता, विचारों में वक्त के अनुसार बदलाव करने की क्षमता, इन सारी बातों को ध्यान में रखकर अगर हम जीवन जीने की कोशिश करें तो रिश्तो में भी मधुरता आएगी और खुशियां भी हमें मिलती रहेगी। ❐

बेल का स्वादिष्ट शर्बत

✍ **किरण उपाध्याय,** रेसिपी एक्सपर्ट

गर्मियों में बेल का शरबत तो आपने बहुत पिया होगा, लेकिन एक बार आप इस तरह से बेल का शरबत बनाकर पिएं। यह बहुत स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक है।

सामग्रीः–

एक पका हुआ बेल, चीनी स्वाद अनुसार, एक संतरे का रस, काला नमक, काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला।

विधिः–

सर्वप्रथम हम बेल को दो टुकड़ों में तोड़ लेंगे। अब हम बेल में से चम्मच की मदद से गूदे (pulp) को किसी बड़े बर्तन में निकाल लेंगे। अब बेल के गूदे (pulp) में थोड़ा पानी डालें और हाथों की मदद से या आलू मैश करने वाले की मदद से अच्छी तरह से मैश कर लें। अच्छी तरह से गूदा (pulp) मैश हो जाने के बाद थोड़ा सा पानी और मिला लेंगे, अब इसे छननी की मदद से छान लेंगे। इससे बीज और रेशे अलग हो जाएंगे। अब हम संतरे को बीच में से दो टुकड़ों में काट लेंगे और निचोड़ कर रस निकाल लेंगे और इस रस को छननी से छान कर बेल के जूस में मिला लेंगे। अब हम इस शरबत को दो ग्लास में डालेंगे, एक में हम चीनी डालेंगे और दूसरे ग्लास में हम स्वाद अनुसार काला नमक, एक चुटकी काली मिर्च पाउडर, एक चुटकी चाट मसाला और कुछ बर्फ के टुकड़े डालकर सर्व करेंगे। आप चाहे तो पुदीने की कुछ पत्तियां भी मिला सकते हैं। इस तरह से हम दो तरह के बेल का शरबत बनाएंगे।

(स्रोत : यूट्यूब – किरण उपाध्याय की रसोई) ❐

लोहासिंह' जैसे रेडियो नाटक आज कहां लिखे जा रहे हैं...?

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

रेडियो का माध्यम पूरी तरह से वाचिक है– यानी लिखने और पढ़ने की शैली से बिल्कुल अलग। बोलने का ढंग कुछ और होता है, लिखने की कला कुछ और बताती है। उदाहरणार्थ, एक 'नहीं' शब्द को जब नौ रसों के अनुसार बोला जायेगा, तो हर बार उसके अर्थ अलग–अलग होंगे। यही कारण है कि शब्दों के असर को परखने के लिए रेडियो की विभिन्न विधाओं का सहारा लिया जाता है। इन विधाओं का स्वरूप अलग है, इनकी प्रस्तुति का तरीका भिन्न है और इनके लिखने के तौर–तरीकों में भी काफी अन्तर है। इसी रूप में रेडियो नाटक की प्रस्तुति विशिष्ट बन जाती है कि वह आम नाट्य–रूपों– खासकर मंचीय नाटकों से बिल्कुल अलहदा हो जाती है।

यों तो सृजनात्मक साहित्य की सभी विधाओं का समावेश रेडियो के अन्तर्गत हो जाता है, लेकिन इसमें संगीत और नाटक का उपयोग सर्वाधिक सार्थक, सहज और सर्जनात्मक ढंग से होता है। इस दृष्टि से रेडियो नाटक अपने स्वरूप–वैशिष्ट्य और प्रभाव–क्षमता के कारण रेडियो के लिए अत्यंत उपयोगी, प्रासंगिक और बहुआयामी सिद्ध हुआ है। इसलिए इसके लेखन और प्रस्तुतीकरण के लिए विशिष्ट तकनीक की आवश्यकता पड़ती है। यह तकनीक क्या है और इसमें कैसे दक्षता प्राप्त की जा सकती है, इसे विस्तार से जानने की आवश्यकता है।

रेडियो नाटक का आरम्भ

हिन्दी में प्रथम रेडियो नाटक के रूप में 'राधाकृष्ण' और 'नल दमयंती' को मान्यता प्राप्त है, जिनका प्रसारण सन् 1936 में 'ऑल इंडिया रेडियो', दिल्ली से हुआ। लेकिन ये नाटक रंगमंच के लिए लिखे गये बाँगला नाटक के अनुवाद थे। इंग्लैंड में भी जो पहला नाटक रेडियो से प्रसारित हुआ था, वह शेक्सपीयर के 'जूलियस सीजर' का एक दृश्य था। पूर्ण रूप में प्रसारित होने वाला पहला नाटक शेक्सपीयर का 'ट्वेल्थनाइट' था, जिसका प्रसारण 28 मई, 1923 को हुआ था। 1926 ई. तक तो मंचीय नाटकों के दृश्य–संकेतों पर आधारित भूमिकाओं की ही प्रधानता होती थी। फिर बाद में ये महसूस किया जाने लगा कि रेडियो नाटक और मंचीय नाटक में जमीन–आसमान का अंतर है। इसलिए 1927 में सिसिल लिविस द्वारा रूपान्तरित कारंेड के उपन्यास 'लार्ड जिम' और उसके कुछ ही पहले रिचर्ड ह्यूजेज के मौलिक रेडियो नाटक 'डेंजर' के प्रसारण

से रेडियो नाटक अपने मौलिक स्वरूप में आकर मंचीय नाटक से अलग हो गया। तब से लेकर अबतक रेडियो नाटक ने अनेक पड़ावों से गुजरते हुए एक लम्बा सफर तय किया है। इस सफर में अनेक उतार–चढ़ावों के बीच से गुजरते हुए आज रेडियो नाटक दृश्य एवं चलंत माध्यमों तथा व्यावसायिकता से भी चुनौती ले रहा है। इतिहास साक्षी है कि साहित्य की अनेक अमर कृतियाँ और कृतिकार पहले रेडियो पर ही आये। ये अलग बात है कि उन्हें ख्याति तब मिली, जब रंगनाटक के रूप में उनके नाटक प्रकाशित हुए। 1954 में मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' और धर्मवीर भारती का 'अंधा युग', 1955 में मोहन राकेश का ही 'लहरों के राजहंस', 1978 में गिरीश बख्शी का नाटक 'लड़ाई' और इसी प्रकार मुद्राराक्षस, विष्णु प्रभाकर और इन जैसे अनेक नाटककारों के नाटक पहले रेडियो पर ही आये।

वास्तव में, रेडियो में नाटक मात्र मनोरंजन का साधन बन कर नहीं आये, बल्कि वे जनरुचि और जनचेतना के साथ–साथ जनशिक्षा और नवीन भाषागत संस्कार भी लेकर आये। इन नाटकों ने जहाँ एक ओर सामाजिक समस्याओं, वर्जनाओं, प्रश्नों और चुनौतियों से लड़ते हुए जागरूकता पैदा करने की कोशिश की, तो दूसरी ओर इन्होंने ऐतिहासिक–पौराणिक परम्पराओं से आम आदमी को रू–ब–रू करने की कोशिश भी की। इस स्थिति ने निश्चित तौर पर रेडियो नाटक के लेखकों की एक ऐसी जमात खड़ी कर दी, जिनसे लंबे समय तक रेडियो समृद्ध बना रहा। डॉ. रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीशचंद्र माथुर, केशवचंद्र वर्मा, गिरिजा कुमार माथुर, चिरंजीत, हिमांशु श्रीवास्तव, सत्येन्द्र शरत, सिद्धनाथ कुमार, डॉ. चतुर्भुज, डॉ. जितेन्द्र सहाय–जैसे लेखकों के नाट्य–लेखन ने निश्चित ही रेडियो नाटक को एक नया आयाम दिया। फिर भी, रेडियो नाटक को साहित्य के इतिहासकार प्रायः हाशिये पर डाल देते हैं, क्योंकि श्रोताओं तक अपनी लम्बी पहुँच के बावजूद ये स्मृतियों में ही दर्ज होते हैं, इतिहास में समाहित नहीं हो पाते। दरअसल रेडियो नाटक की अपनी एक अवधारणा है, अपना 'फार्मेट' है और उस 'फार्मेट' के अन्दर श्रोताओं से चरित्रों की संलग्नता जितनी ज्यादा होगी, वह उतना ही सफल रेडियो नाटक होगा। इस अर्थ में चिरंजीत एक सफल नाटककार माने जाते हैं। इसी प्रकार रामेश्वर सिंह काश्यप का धारावाहिक नाटक–शृंखला 'लोहासिंह' का उल्लेख किया जा सकता है, जिसे सुनने के लिए पूरे सप्ताह–भर लोग प्रतीक्षा करते थे। इसके मुख्य चरित्र लोहा सिंह, खदेरन की मदर, बुलाकी, फाटक बाबा आदि को आज भी रेडियो के पुराने श्रोता याद करते हैं।

तब से अब में बहुत परिवर्तन आया है। रेडियो प्रसारण आज अनेक स्तरों पर अपने अस्तित्व–संकट से जूझ रहा है। बदलते वक़्त में रेडियो के कई 'फार्मेट' या तो विलुप्त हो रहे हैं या विलुप्तता की कगार पर हैं। इस दृष्टि से रेडियो नाटक के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं, क्योंकि उसे अपने 'फार्मेट' के भीतर नये प्रयोग करने हैं, दृश्यहीनता की कमी को दूर करने के लिए नयी भाषा गढ़नी है और ध्वनि तथा संगीत–प्रभावों से समसामयिक युगचेतना के अनुरूप वातावरण का निर्माण करना है।

रेडियो नाटक विशिष्ट संरचना

प्राचीन आचार्यों ने जिस स्वरूपविधान को 'दृश्य' कहा है, वह रेडियो नाटक में मात्र 'श्रव्य' हो गया है। प्राचीन शास्त्रों में सृजनात्मक साहित्य के दो भेद प्राप्त होते हैं– श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। इसमें रूपक को दृश्य काव्य माना गया और अन्य विधाओं को श्रव्य काव्य। रूपक का अर्थ वहाँ उस माध्यम से था, जिसे देखा और दिखाया जा सके। इसीलिए नाटक को पहले रूपक के ही नाम से जाना जाता था।

यह देखने और दिखाने का अर्थ क्या है? देखनेवाला दर्शक है और दिखानेवाला अभिनेता। अभिनेता के माध्यम से रचना का पूर्ण प्रत्यक्षीकरण होता है, यानी दर्शक स्थितियों और घटनाओं को अपने सामने घटित होते देखता है। इस दृष्टि से साहित्य की अन्य विधाओं का कार्य जहाँ लिख दिये जाने मात्र से पूरा हो जाता है, वहीं नाटक का कार्य तबतक अधूरा है, जबतक कि वह मंच पर प्रस्तुत न हो जाये। इस प्रस्तुतीकरण में सहायक तत्व होते हैं–कथावस्तु, परिवेश और वातावरण, संवाद, साज–सज्जा, वेशभूषा, प्रकाश, ध्वनि तथा संगीत।

इस तरह की नाट्य–प्रस्तुति के लिए दर्शकों का होना अनिवार्य है, क्योंकि दर्शक नाटक देखते हुए एक साथ तटस्थ और भोक्ता दोनों होता है। नाट्य–प्रस्तुति को देखते हुए वह यह अनुभव करता है कि सबकुछ उसी के साथ घटित हो रहा है और उसकी समस्त इन्द्रियाँ उसी अनुभव में रच–बस कर एकाकार हो जाती हैंय यहाँ तक कि वह अपने–आप को भूलकर अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को नाट्य–कार्य–प्रक्रिया में विलीन कर देता है। साहित्यशास्त्र में इसे ही 'साधारणीकरण' कहा गया है। 'साधारणीकरण' की यह प्रक्रिया जिस नाटक में जितनी संपूर्णता में होगी, वह नाटक उतना ही सशक्त और जीवंत होगा।

लेकिन रेडियो नाटक का मुख्य आधार ध्वनि है, अतः इसमें दर्शकों का स्थान श्रोता ले लेते हैं और इस रूप में

रेडियो नाटक के कार्य–व्यापार मंचीय नाटक से भिन्न हो जाते हैं। रंगमंचीय नाटक की एक सबसे बड़ी सीमा है– दृश्य–परिवर्तन। मंचीय नाटकों में दृश्य–परिवर्तन के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। इसी कारण से अब मंच–मुक्त या दृश्य–मुक्त नाटक अधिक प्रचलन में हैं। जो दृश्य–प्रधान नाटक होते हैं, उनमें दृश्यों की संख्या प्रायः सीमित होती है। तब भी, बार–बार के दृश्य–परिवर्तन नाट्य–रस में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार वहाँ दृश्यों के बड़े–छोटे होने तथा दृश्य–विशेष के वातावरण के हिसाब से 'प्रापर्टी' में भी विविधता रखनी पड़ती है।

इसके विपरीत रेडियो में ऐसी कोई विवशता नहीं है। रेडियो नाटक देश और काल की सीमा से परे होता है। वह यह दूरी बड़ी आसानी से तय कर लेता है। रेडियो नाटक का कोई पात्र यदि अभी भारत में है, तो उसे महज एक हवाईजहाज के ध्वनि–प्रभाव से इटली या अमेरिका पहुँचाया जा सकता है।

ध्वनि और उसका उपयोग

ध्वनि भावाभिव्यक्ति का सर्वाधिक सक्षम और महत्वपूर्ण साधन है। अपने व्यावहारिक जीवन में हम एक ही शब्द को भिन्न–भिन्न प्रकार से उच्चरित करके प्रेम, घृणा, व्यंग्य, क्रोध आदि भावों को अभिव्यक्ति देते हैं। इस दृष्टि से रेडियो नाटक में ध्वनि का उपयोग तीन प्रकार से होता है–

1. भाषा
2. ध्वनि–प्रभाव
3. संगीत

भाषा

यों तो किसी भी अभिव्यक्ति के लिए भाषा मुख्य माध्यम होती है, लेकिन रेडियो नाटक में भाषा के ऊपर दोहरा दायित्व आ जाता है। एक तो संवाद के रूप में और दूसरा, कार्य–व्यापार के रूप में। रंगमंच पर जो कुछ भी दृश्य' में साकार होता है, उसे रेडियो नाटक में भाषा के माध्यम से साकार करना होता है। यानी, नाटक के तीन प्रमुख तत्वों– आंगिक, वाचिक और आहार्य में से रेडियो नाटक सिर्फ वाचिक का ही अनुगामी होता है। उदाहराणार्थ, मंच पर पात्र कह सकता है–''आज बहुत गर्मी है....'' और इसके बाद उसका रूमाल से हवा करना, उसकी कमीज का पसीने से तर–ब–तर होना आदि उसकी कहानी स्वयं कह देते हैं। लेकिन रेडियो नाटक में इसके आगे भी जोड़ना होगा–''देखो ना, मेरी कमीज पसीने से बिल्कुल भींग गयी है। पसीना पोंछते–पोंछते रूमाल भी गीला हो गया है..''

इसी प्रकार किसी नवयौवना के रूप–शृंगार के लिए मंच पर यह कहना पर्याप्त होगा–''आज तुम बहुत प्यारी लग रही हो...।'' लेकिन रेडियो नाटक में कहना पड़ेगा–''माथे पर बिंदी, आँखों में काजल, जूड़े में फूलों की वेणी और गले में ये मोतियों की माला। सच में, आज तुम बहुत प्यारी लग रही हो...।'' इस रूप में रेडियो नाटक बिम्बधर्मी होता है यानी वह शब्दों के माध्यम से चित्र का निर्माण करता चलता है।

रेडियो नाटक में भाषा का व्यवहार दो रूपों में होता है– एक, 'संवाद', 'कथनोपकथन' या 'डायलॉग' के रूप में और दूसरा 'नैरेशन' या 'वाचन' के रूप में।

'संवाद' या 'कथनोपकथन' रेडियो नाटक की आत्मा होते हैं। एक प्रभावकारी संवाद जहाँ रेडियो नाटक की अभिव्यक्ति को एक ऊँचाई प्रदान करता है, वहीं लचर एवं कमजोर संवाद श्रोता के ध्यान एवं रुचि को भटका सकता है और वह रेडियो सेट को बंद करने के लिए बाध्य हो सकता है। वस्तुतः 'कथनोपकथन' के द्वारा रेडियो नाटक की संपूर्ण कथा–अन्विति, स्थानीय रंग, पृष्ठभूमि और काल के संबंध में पता चलता है। यह नाटक की गति पर नियंत्रण रखने का काम भी करता है।

इसके अलावा रेडियो नाटक के संवाद वातावरण के निर्माण में भी सहायक होते हैं, क्योंकि इनमें दृश्यत्व का अभाव होता है। इस रूप में कई बार वातावरण–निर्माण में ध्वनि–प्रभाव नाकाफी होते हैं, जिन्हें तब शब्दों से भी व्यक्त करना होता है। उदाहरण के रूप में मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के रेडियो नाट्य–रूपांतर में मल्लिका कालिदास से कहती है–''वही आषाढ़ का दिन है। उसी तरह मेघ गरज रहे हैं। वैसे ही वर्षा हो रही है। वही मैं हूँ। इसी घर में हूँ। किन्तु...''

'नैरेशन' से तात्पर्य नाटक के उस अंश से है, जिसमें पात्र नाटक के क्रियाकलाप का वातावरण निर्मित करता है, आवश्यक विवरण देता है और घटनाओं की शृंखला को जोड़ने का काम करता है। ऐसे पात्र के लिए वाचक, वाचिका, प्रवक्ता, नैरेटर, सूत्रधार, स्त्री स्वर, पुरुष स्वर आदि का व्यवहार होता है। ऐसे पात्रों का काम नाटक की उन बातों को कहना होता है, जो कथनोपकथन के अन्तर्गत नहीं आ पातीं। रेडियो रूपक में निश्चित रूप से 'नैरेटर' का काम अधिक होता है, पर रेडियो नाटक में उसकी भूमिका अत्यंत सीमित होती है।

रेडियो नाटक में 'नैरेटर' की भूमिका दो प्रकार से आती है– एक, ऐसे 'नैरेटर', जिनके व्यक्तिगत जीवन का नाटक की घटनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता। उनकी भूमिका मात्र तटस्थ दर्शक की होती है। वे नाटकीय क्रियाकलापों के प्रवक्ता मात्र होते हैं।

दूसरे प्रकार के 'नैरेटर' नाटक के पात्र होते हैं और जिनके जीवन की

घटनायें नाटक से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखती हैं और जो कई बार दूसरे पात्रों से संवाद करने की स्थिति में भी होते हैं। विशेषकर, रेडियो के 'कथा–नाटकों' में मुख्य पात्र पूरी कहानी कहता है और वह एक ओर जहाँ वाचक की भूमिका का निर्वाह करता है, तो दूसरी ओर चरित्र–विशेष का निर्वहन भी।

ध्वनि–प्रभाव

ध्वनि–प्रभाव का उपयोग नाटक में विशेष प्रभावों के लिए किया जाता है। बादल, वर्षा, कार–जीप, शोरगुल आदि ध्वनियों का व्यवहार नाटक के क्रियाकलापों को उभारने के लिए किया जाता है। मंचीय नाटकों में दृश्य–विधान के लिए या तो लेखक की ओर से रंगनिर्देश दिये जाते हैं, या यह निर्देशकीय सूझबूझ पर छोड़ दिया जाता है। यानी कोई घटना किस समय और किस स्थान पर हो रही है, घटना के समय वातावरण कैसा है आदि–आदि का प्रभाव दिखाने के लिए प्रकाश–योजना आदि का उपयोग जरूरी होता है। लेकिन रेडियो नाटक ध्वनि–संकेतों के द्वारा ही समय और परिवेश का बोध कराता है। कार का हॉर्न सुनाई देता है, फोन की घंटी बजती है और मिल के सायरन की आवाज बताती है कि सुबह के दस बजे हैं और काम पर पहुँचने का समय हो गया है। वस्तुतः ध्वनि–प्रभाव रेडियो नाटक का एक अत्यंत सक्रिय तत्व है, जिसके अभाव में नाटक की अदृश्यता सीमित हो जाती है और श्रोताओं को नाट्य–रस की प्राप्ति पूरी तरह नहीं हो पाती।

वास्तव में, ध्वनि–प्रभावों का प्रयोग नाटक के लेखक से अधिक, इसके निर्देशक पर आश्रित होता है। फिर भी, लेखक द्वारा यदि ध्वनि–प्रभावों के संकेत दे दिये जायें तो कोई हर्ज नहीं है। सआदत हसन मंटो के रेडियो नाटक 'कबूतरी' का यह अंश इसका एक अन्यतम उदाहरण है–''मुर्ग की आवाज– पथरीले जीने पर कदमों की आवाज– फिर मुर्ग की आवाज– कदमों की आवाज– दो लड़कियों के गुनगुनाने की आवाजें, मानो वे होंठों–ही–होंठों में पूजन कर रही हों। यह गुनगुनाहट कुछ क्षणों तक जारी रहे– इसके बाद आरती शुरू– आरती ख़त्म हो जाती है– विश्राम– घंटा एक बार बजता है– विश्राम– दूसरी बार घंटा बजता है– पथरीले जीने पर कदमों की आवाज, ये जाहिर करने के लिए कि दोनों लड़कियाँ मंदिर से बाहर निकल रही हैं...।''

सच्चाई तो यही है कि सआदत हसन मंटो–जैसे बहुत कम लेखक हैं, जो ध्वनि–प्रभाव के लिए इतना सशक्त लेखकीय निर्देश देते चलते हैं। तकनीकी शब्दावली में जिसे 'कैप्चरिंग' और 'एटमॉसफियर' कहा जाता है, वह मंटो के रेडियो नाटकों में अद्भुत है। मंटो ने रेडियो नाटकों के लेखन और निर्देशन में तकनीक के जितने नये और सफल प्रयोग किये हैं, बरसों गुजर जाने के बाद वे आज भी ताजा लगते हैं।

इन ध्वनि–प्रभावों का इस्तेमाल दो रूपों में होता है– एक, वातावरण–निर्माण के लिए– जैसे, तूफान, समंदर की लहरें, हवाई जहाज, रेलगाड़ी, पशु–पक्षी आदि की ध्वनियाँ। आम तौर से ये ध्वनि–प्रभाव पूर्व–ध्वन्यंकित होते हैं और रेडियो स्टेशन के संग्रह में होते हैं, जिनका उपयोग नाटक की 'डबिंग' और 'मिक्सिंग' के समय किया जाता है।

दूसरे रूप में ध्वनि–प्रभावों का इस्तेमाल पात्रों के क्रिया–कलापों तथा घटनाओं के सूचक के रूप में होता है– जैसे, खाँसना, हँसना, रोना, दरवाजे पर दस्तक, कुंडी खड़कना, पदचाप, चूड़ियों की आवाज, चाय पीने की ध्वनि आदि। ये सारे ध्वनि–प्रभाव नाटक की प्रस्तुति के समय ही उत्पन्न किये जाते हैं। रेडियो नाटकों में प्रयुक्त ध्वनि–प्रभाव के माध्यम से किसी भी श्रोता को चांद या मंगल ग्रह की सैर के लिए भेजा जा सकता है और उसकी अतृप्त आकांक्षाओं को तृप्त किया जा सकता है।

संगीत

संगीत रेडियो नाटक का तीसरा और महत्वपूर्ण उपकरण है। संगीत–ध्वनियों का प्रयोग पृष्ठभूमि एवं वातावरण–निर्माण, दृश्य–परिवर्तन, भावोद्रेक आदि के लिए किया जाता है। संगीत के बिना रेडियो नाटक उस दुल्हन की तरह है, जो हर तरह से सजी–धजी होने के बावजूद आभूषणों से रहित हो। वस्तुतः संगीत–प्रभावों का प्रयोग एक सर्जनात्मक दृष्टि और रचनात्मक कौशल की मांग करता है। रेडियो नाटकों में इस संगीत का इस्तेमाल दो रूपों में होता है–

1. स्वतंत्र रूप से दृश्यबंधों को जोड़ने के लिए।
2. संवादों की पृष्ठभूमि के रूप में।

संगीत–प्रभाव का इस्तेमाल स्वतंत्र रूप से नाटक के आरम्भ तथा अंत में अनिवार्य रूप से तो होता ही है, नाटक के बीच के दृश्य–परिवर्तन और समय–अंतराल के लिए भी इसका सार्थक प्रयोग किया जाता है। इसमें संगीत नाटक के प्रारम्भ से मेल खाता होना चाहिए, जो आरम्भ के दृश्यों को स्थापित करने के साथ–साथ श्रोताओं के मन में कौतूहल भी जगाता चले। इसके विपरीत समाप्ति–संगीत नाटक के 'ट्रीटमेंट' और उसकी चरमसीमा को उभारने वाला होना चाहिए। इसी प्रकार दृश्य–परिवर्तन का संगीत छोटा और कार्य–व्यापार से मेल खाता होना चाहिए। यह घटनाओं के आरम्भ या उसके अंत का सूचक भी हो सकता है।

संवादों की पृष्ठभूमि में चलनेवाले संगीत के लिए अत्यंत कल्पनाशीलता और सर्जनात्मक सोच की आवश्यकता होती

है। क्योंकि इसके द्वारा पात्रों के आपसी संबंध, उनके अंतर्द्वन्द्व, उनकी भावात्मक अभिव्यक्ति आदि को अत्यंत सशक्तता के साथ उभारा जा सकता है। इसके अलावा पृष्ठभूमि–संगीत वातावरण–निर्माण में भी सहायक होता है। संघर्षों, आवेगों, करुणा, शृंगार, वीर आदि सभी भावों–अनुभावों के अनुरूप संगीत का प्रयोग नाटक को एक सशक्त भावाभिव्यक्ति प्रदान करता है।

इसी प्रकार संगीत देश और काल सापेक्ष भी होता है। उदाहरणार्थ, पौराणिक नाटकों में आधुनिक और पाश्चात्य वाद्य–यंत्रों सिंथेसाइजर, गिटार और आधुनिक भावभूमि के नाटक में मृदंगम, वीणा आदि का प्रयोग अत्यंत अनुपयुक्त और असंगत लगेगा। अतः संगीत–प्रभावों के इस्तेमाल में विवेक से काम लेना बहुत जरूरी है। यहाँ तक कि इस रूप में गजल–गायकी के अंश, शास्त्रीय संगीत का आलाप या तान, फ्यूजन संगीत का सरगम, ध्रुपद का आलाप, हमिंग आदि का प्रयोग भी विवेकपूर्ण एवं सर्जनात्मक ढंग से हो सकता है।

'झलकी' और 'प्रहसन'

रेडियो नाटक के अंतर्गत ही 'झलकी' अथवा 'प्रहसन' का भी समाहार हो जाता है। 'झलकी' में छोटे–छोटे हास्य–प्रसंगों को अति–नाटकीयता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। अत्यंत छोटी–सी अवधि में नाटकीय स्थितियाँ चरमोत्कर्ष तक पहुँचती हैं और भरपूर हास्य के साथ समाप्त हो जाती हैं। 'झलकी' की अवधि प्रायः 15 मिनट के आसपास होती है, किन्तु इससे कम अवधि की भी 'झलकी' हो सकती है।

इसी प्रकार 'प्रहसन' का उद्देश्य भी मनोरंजन ही होता है, लेकिन इसमें प्रायः किसी–न–किसी सामाजिक समस्या या संदेश को श्रोताओं तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। इसकी अवधि लंबी भी हो सकती है। कई प्रहसन तो धारावाहिक का रूप ले लेते हैं और इसके पात्र सामाजिक जीवन में अत्यंत लोकप्रियता हासिल कर लेते हैं। आकाशवाणी, पटना से प्रसारित होने वाले प्रहसन 'लोहासिंह' के पात्र लोहासिंह, खदेरन का मदर, बुलाकी, भगजोगनी और फाटक बाबा–जैसे पात्र आज तक उतने ही लोकप्रिय हैं, जितना अपने प्रसारण–काल (सन् 1962) में थे।

आज का रेडियो नाटक

वास्तव में, रेडियो नाटक समय, परिवेश, स्थान तथा क्रिया–विशेष के अधीन नहीं होता, जैसा कि रंगमंचीय नाटक, बल्कि यह अंतरिक्ष और समय में तैरता रहता है। इतना सब होने पर भी आज का रेडियो नाटक सुविधाभोगी बन गया है, पहले की तरह नहीं, जब नाटक की प्रस्तुति 'जीवंत' (लाइव) हुआ करती थी और रिकॉर्डिंग–डबिंग की पर्याप्त सुविधा नहीं थी। एक बार जो 'डायलॉग' बोल दिया गया, उसे लौटाना असंभव था। लेकिन आज रिकॉर्डिंग–डबिंग की सुविधा ने ड्रामा–प्रोड्यूसर और कलाकार– दोनों को लापरवाह बना दिया है। चाहे जितनी बार रिकॉर्ड करो, काटो–छाँटो, डबिंग कर लो। इसलिए कलाकार भी 'डायलॉग डिलिवरी' पर ध्यान नहीं देते। उन्हें भी पता है चाहे जितना अटकें, प्रोड्यूसर एक–एक शब्द, एक–एक लाइन जोड़कर डबिंग कर ही लेगा।

इसी प्रकार अब कुछ लोग ये कहने लगे हैं कि रेडियो नाटक समाप्त हो गया है, 'आउटडेटेड' हो गया है या ये विधा अब मृत हो गयी है। आश्चर्य और दुख अब होता है जब ये बात रेडियो के ही कुछ मित्र और नाटक–साहित्य के कुछ तथाकथित लेखक कहते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि आज भी रेडियो में सबसे पुरानी और रेडियो को 'रेडियो' के रूप में स्थापित करने वाली दो ही विधायें हैं– एक नाटक और दूसरा संगीत। रेडियो नाटक अपने आप में कितनी प्रभावशाली विधा है, यह इस उदाहरण से समझा जा सकता है–

एच. जी. वेल्स द्वारा 1938 में एक नाटक लिखा गया था, जिसका नाम था–''वार ऑफ द वर्ल्ड्स''। अमेरिका में वह नाटक ''द नाइट दैट पैनिक्ड अमेरिका'' नाम से रेडियो पर प्रसारित हो रहा था। कहने की जरूरत नहीं कि ये नाटक जीवंत प्रसारित हो रहा था। इसमें मंगल ग्रह के निवासी पृथ्वी पर आक्रमण कर देते हैं, जिसका केन्द्र अमेरिका है। रेडियो से उद्घोषणा होती है, ''लोग आतंकित ना हों। अभी–अभी पता चला है कि मंगल ग्रह से आये कुछ अज्ञात आक्रमणकारियों ने अमेरिका पर हमला कर दिया है....'' इसके बाद पूरे अमेरिका में अफरा–तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया और लोग अपना घर–बार छोड़कर भागने लगे। जब रेडियो स्टेशन को इस बात का पता चला तो तत्काल उस नाटक का प्रसारण रोक दिया गया और बार–बार ये उद्घोषणा करायी जाने लगी–''अभी मंगल ग्रह पर आधारित नाटक का प्रसारण हो रहा था। डरने की कोई बात नहीं है। यहाँ कोई आक्रमण नहीं हुआ है। अमेरिका में सभी सुरक्षित हैं।''

तो ये थी रेडियो नाटक के प्रभाव की समग्रता और प्रभाव–क्षमता। हाँ, ये बात जरूर है कि आज रेडियो नाटक लिखने वाले लोगों की कमी हो गयी है। फिल्म या टीवी सीरियल लिखने वाले लोग मिल जाते हैं, क्योंकि इसमें अपेक्षाकृत धन और ग्लैमर अधिक है पर रेडियो की चुनौती स्वीकारने वाले अब कहाँ हैं, जो समय की माँग के अनुरूप नये विषयों, नये क्षेत्रों का अन्वेषण करें और उसपर एक सुदृढ़ और प्रभावशाली नाटक लिख दें।

❒

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख ज्यादा पसंद आया।

क्या कमियां हैं

और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com